ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

फरवरी, 2013

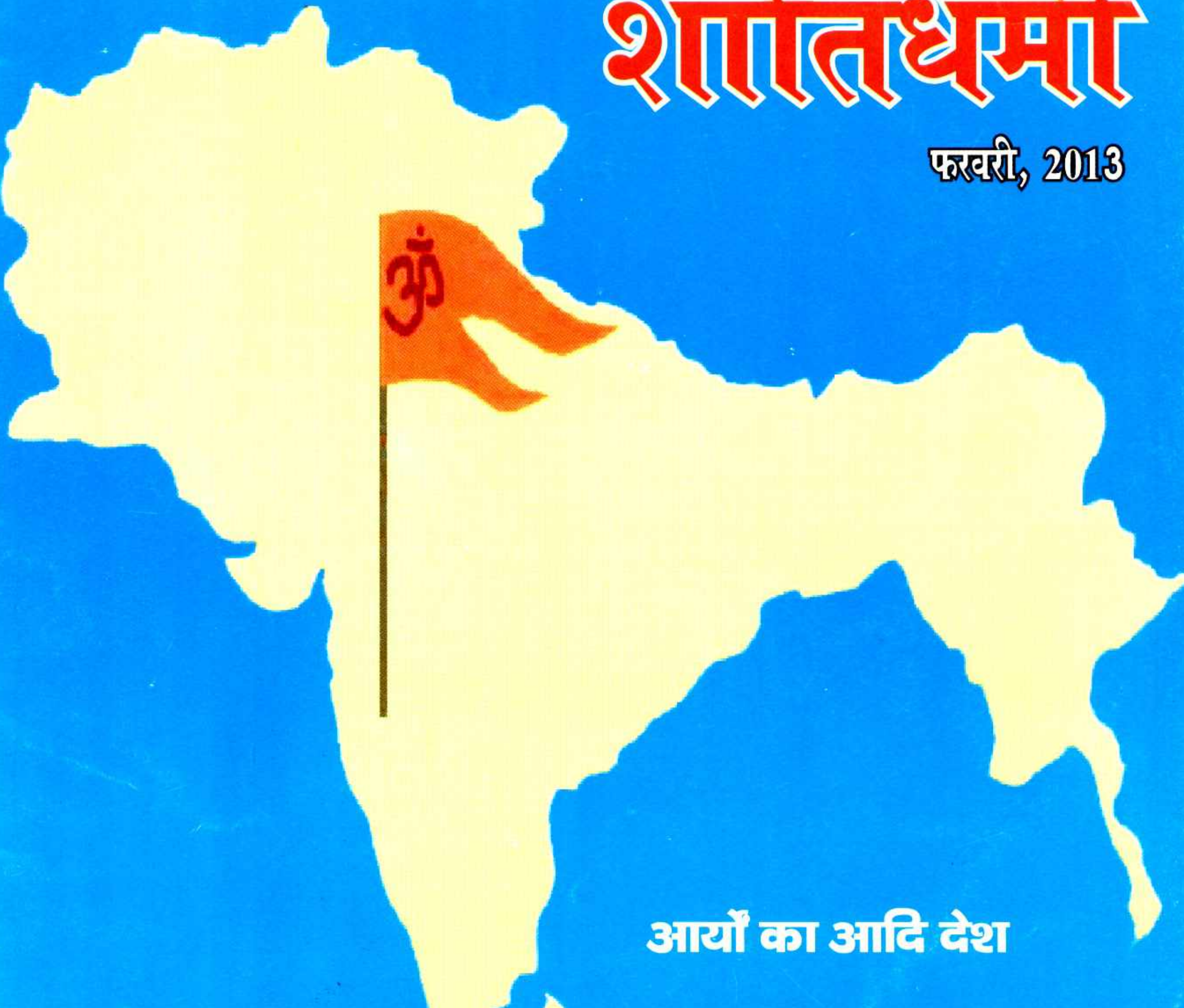

आर्यों का आदि देश

आदि सृष्टि कहां हुई

आर्य भारत के ही मूल निवासी हैं

महर्षि की ऐतिहासिक दूरदर्शिता

वेलेंटाइन-डे : पारिवारिक एकता दिवस

₹10

गत दिवस जीन्द में आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में विशिष्ट कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। चित्रों में शांतिधर्मी के सम्पादक चन्द्रभानु आर्य, मा० सतबीर आर्य, मा० केवल जुलानी, डा० राजपाल आर्य, रघुबीर सिंह मलिक, सूरजमल आर्य खटकड़, जगमति मलिक कैथल, मा० राजबीर आर्य, चौ० दयाकिशन आर्य, विरेन्द्र लाठर व सौदागर चन्द्र आर्य को सम्मानित करते हुए अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी, संयोजक स्वामी रामवेश जी, स्वामी ओमवेश जी, मुख्य अतिथि श्री वेदप्रकाश बेनीवाल, मा० जगदीश सिन्धू व वैद्य दयाकिशन।

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

फरवरी, २०१३

वर्ष : १५ अंक : १ फाल्गुन २०६६
सृष्टि संवत्-१६६०८५३११३, दयानन्दाब्द : १८६

प्रेरणा स्तम्भ

भारत मनुष्य जाति की मातृभूमि और संस्कृत यूरोपियन भाषाओं की जननी है, वह हमारे दर्शन की जननी है, अरबों के माध्यम से हमारे गणित की जननी, बुद्ध के माध्यम से ईसाइयत में निहित आदर्शों की जननी, ग्राम-पंचायत के माध्यम से स्वायत्त शासन और लोकतंत्र की जननी है। वास्तव में भारतमाता अनेक रूपों में हम सब की जननी है। -Villiam Durant

सम्पादक : चन्द्रभानु आर्य
(चलभाष ०८०५६६-६४३४०)
संयुक्त सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष ०६४१६२-५३८२६)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर
कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

मूल्य

एक प्रति	: १०.०० रु.
वार्षिक	: १००.०० रु.
आजीवन	: १०००.०० रु.

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द-१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२-५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

क्या? कहाँ?....

आलेख

शिक्षा के सुधार में ही समस्त सुधार निहित ६
ऋषि की ऐतिहासिक दूरदर्शिता ६
आदि सृष्टि कहाँ? ११
आर्य इसी देश के मूल निवासी हैं- डॉ० रामविलास शर्मा १६
मन लगाने की विधि (संध्या रहस्य) २०
वैलेन्टाईन डे को पारिवारिक एकता दिवस के रूप में मनाएँ २३
दही में स्वास्थ्य के रहस्य २५
विज्ञान ने भी नकारा आर्य द्रविड का भेद (अन्ततः) ३३
कहानी/प्रसंग
मेहनत की कमाई-२७, मां के कर्ज का हिसाब, एक रात की नींद-२८
कविताएँ- २७, २६
स्तम्भ-आपकी सम्मतियाँ ५, अनुशीलन, सोम सरोवर ७ चाणक्य नीति, अमृतवचनावली ८, बाल वाटिका २६, भजनावली २६
साथ में : कार्य के दबाव से नहीं होता तनाव, समाचार सूचनाएँ,

वेद-विचार

सामवेद आग्नेय पर्व

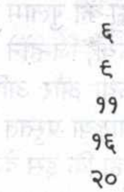

पद्यानुवाद : स्व० आचार्य विद्यानिधि शास्त्री

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विश स्तवेतातिथिः।
विश्वे यस्मिन्नमर्त्ये हव्यं मर्तास इन्धते।।८५।।

अतिथि समान बहुत ही प्यारे अग्निदेव की स्तुति गाओ।
प्रातःकाल सभी जन मिलकर भक्ति भाव मन में लाओ।।
अमरणधर्मा[1] जिसके प्रति सब मरणशील जन हवि देवें।
भवभयबाधक[2] सुख के साधक जिसको निज दिल से सेवें।।

शब्दार्थ : १ न मरने वाला, २ संसार का भय मिटाने वाला।

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

अपना इतिहास

❑चन्द्रभानु आर्य

एक प्रसिद्ध कहावत है कि झूठ को हजार बार बोला जाए तो वह भी सत्य के समान प्रतीत होने लगता है। आर्यावर्त्त के इतिहास के संबंध में भी पिछले कुछ सौ वर्षों में इतना झूठ बोला गया है कि इस देश का वास्तविक इतिहास तो ऐसा लगता है कि जैसे लुप्त ही हो जाएगा। किसी पाठ्यक्रम में उस इतिहास को स्थान नहीं दिया गया है, जो इस देश के साहित्य और इतिहास ग्रंथों में लिखा गया है। कितनी बड़ी विडम्बना है कि इस देश की सन्तति को उन्हीं लोगों का लिखा झूठा इतिहास पढ़ाया जा रहा है जिन्होंने इस देश को गुलाम बनाकर इसका सब प्रकार से शोषण दोहन किया, जिन्होंने इतिहास के पुरातात्त्विक साक्ष्यों को विकृत किया और अभिलेखों को नष्ट-भ्रष्ट कर उनकी विकृत व्याख्या प्रस्तुत की। हजारों मील दूर बैठे एक विचारक ने कहा कि इस देश का कोई इतिहास नहीं है-- उसकी बात को सत्यवचन मानकर इस देश के तथाकथित बुद्धिजीवी मानसिक कसरत करते रहते हैं। इस देश की पराधीनता के काल में भी यहाँ के वैभव की सुगन्धि से आप्लावित होकर इस देश को विश्व की संस्कृति का पालना कहने वाले लुई जैकोल्यो और अपने अध्ययन के बाद भारत के बारे में अपनी धारणा को बदलकर इससे अब भी बहुत कुछ सीख सकने की भावना व्यक्त करने वाले मैक्समूलर जैसे विद्वानों के विचारों को सामने नहीं आने दिया गया।

देश के इतिहास के मूल में जाने का विषय केवल अतीत की घटनाओं को कुरेदना नहीं है, बल्कि यह हमारे और विश्व के भविष्य का आधार है। क्या यह एक कल्पना मात्र है कि पूरा विश्व एक परिवार बन सकता है और इसमें जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्रवाद, नस्लवाद के सभी झगड़े समाप्त हो सकते हैं? इसका उत्तर हमारे इतिहास के अन्वेषण में छुपा हुआ है। राजनैतिक और सामाजिक आदर्श इस देश के इतिहास मे जीवन्त हैं। काल्पनिक आदर्शों की निष्ठा के कारण वास्तविक और प्रामाणिक आदर्शों को झूठा सिद्ध करने के प्रयासों का कोई औचित्य नहीं है।

इतिहासकार का कार्य आप्त पुरुष की तरह होता है। यदि वह पक्षपात पर उतर आया तो इतिहास में विकृति अवश्यम्भावी होती है, जो देश के भविष्य पर प्रभाव डालती है। गुलामों का इतिहास लिखने वाली विजयी जातियाँ इस बात का ध्यान रखती हैं कि पराजित जाति के स्वाभिमान को रौंद दिया जाए ताकि यह फिर कभी सिर उठाने के योग्य न रहे। हमारे देश का इतिहास जो विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा लिखा गया है उसमें पक्षपात के स्पष्ट प्रमाण हैं। भारतवर्ष के भौगोलिक एवं साहित्यिक साक्ष्यों को उपेक्षित करके इतिहास लिखने की चेष्टा करना प्रत्यक्ष पक्षपात और बौद्धिक आक्रमण ही है। वास्तव में इतिहास के आधार पर धारणाएँ बनती हैं, पर यहाँ तो धारणाओं के आधार पर इतिहास बनाया जाता है। यह बात पाठक इसी अंक में प्रकाशित एक वार्तालाप में पढ़ें कि किस प्रकार अपनी पूर्वाग्रहजनित धारणाओं की पुष्टि के लिए बड़े से बड़े शोधकर्त्ताओं के मत को भी उपेक्षित कर दिया जाता है। तो आर्यों के आक्रमण का सिद्धान्त घड़ने के पूर्वाग्रह में किसी को क्या आश्चर्य हो सकता है? 'किसी संस्कृत ग्रंथ वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहाँ के जंगलियों को लड़कर, जय पाके, निकाल के, इस देश के राजा हुए, पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है?' (स्वामी दयानन्द)

दैनिक भास्कर १६ जनवरी २०१३ में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार जर्मनी के मैक्स प्लैंक इंस्टिट्यूट फॉर इवोल्यूशन एंथ्रोपोलोजी के अध्ययन में पाया गया है कि लगभग ४२३० वर्ष पहले भारत और दक्षिण पूर्व एशिया से आस्ट्रेलिया में लोगों का प्रवास हुआ था। इस अध्ययन में ३०० प्रजातियों को शामिल किया गया था। यह अध्ययन मनुष्य जीनोम पर आधारित था जिसमें विभिन्न आबादियों में एक खास तरह के पैटर्न की समानता और अन्तर को देखकर जेनेटिक डाटा की तुलना की जाती है। ये साक्ष्य नए लग सकते हैं जो भारतवासियों द्वारा लिखित इतिहास की पुष्टि करते हैं कि आर्यों ने आर्यावर्त्त से ही संख्या अधिक होने पर विभिन्न स्थानों पर जाकर बस्तियाँ स्थापित की थीं। पर विश्व भर में फैले भौगोलिक और सांस्कृतिक साक्ष्य इसी इतिहास की पुष्टि करते हैं कि यह देश ही मानव संस्कृति का मूल है। जितनी विद्या और विचार भूगोल में फैले हैं वे भी इसी देश से प्रचरित हुए हैं।

स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रंथों में स्थान-स्थान पर संस्कृत साहित्य में उपलब्ध इतिहास पर सूत्र रूप में प्रकाश डाला है। श्रीयुत् पी० एन० ओक, पं० लेखराम, पं० भगवद्दत्त, वीर सावरकर आदि महापुरुषों ने इतिहास के विलुप्त किये गए सूत्रों को देखा, परखा है। भारतीय इतिहासकारों ने विदेशियों द्वारा प्रस्थापित पूर्वाग्रहों को प्रमाणों के साथ असत्य सिद्ध कर दिया है। फिर भी देश की सन्तति को विदेशियों द्वारा लिखित इतिहास ही पढ़ाया जाता है तो इसे गुलामी मानसिकता के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है!

आपकी सम्मतियाँ

जनवरी अंक में प्रस्तुत नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का मत (पृष्ठ ३) भारत को 'विश्वगुरु' के रूप में प्रतिष्ठित करता है। मनोज चतुर्वेदी की रचना सुभाषचन्द्र बोस के चिन्तन एवं अवदान का बखूबी परिचय दे रही है। नेताजी का यह मत आचरणीय होना चाहिए कि 'अपने मान सम्मान, सत्य और मनुष्यता के लिए प्राण देने वाला वास्तविक विजेता होता है।' दिसम्बर अंक में नरेन्द्र आहुजा, लक्ष्मण नेवटिया तथा स्वामी सत्यपति का लेखन अच्छा लगा। डॉ० सन्तोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी कृत 'शिक्षा व साहित्य : संस्कृति के संवाहक' शीर्षक रचना सारगर्भित है। विचार कणिका: (संकलन : प्रतिभा) प्रभाव छोड़ रही है। 'भारत-माता' शीर्षक कविता भारत के महत्त्व को (संक्षेप में ही सही) हमारे सामने रख रही है।

डॉ० महेशचन्द्र शर्मा
'अभिवादन' १२८-ए, श्याम पार्क,
साहिबाबाद (गाजियाबाद) उ० प्र०-२०१००५

जनवरी अंक के मुखपृष्ठ पर भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का चित्र देशभक्ति की भावना को प्रबल करता है। सम्पादकीय 'गणतन्त्र की रक्षा' देश के लोगों को झंझोड़ने वाला है। पिछले कुछ समय से जिस तरह देश में बलात्कार/गैंगरेप की घटनाओं की बाढ़ आई हुई है, उससे न केवल हमारा सिर शर्म से झुक जाता है बल्कि इससे संस्कृति के विकृत होने तथा सरकार के लाचार होने का भी पता चलता है। इस संदर्भ में कोई भी महिलाओं की मर्यादा, शालीनता, वेशभूषा तथा सहशिक्षा पर सवाल उठाता है तो लोग उसके पीछे पड़ जाते हैं। इसके अलावा इन मामलों में जो राजनीति हो रही है वह भी शर्म की बात है। यदि हम गणतंत्र का सही अर्थ समझते हैं तो आबादी के इस आधे भाग महिला वर्ग की रक्षा करनी होगी। डॉ० रामभगत लांगायन की अमृत वचनावली अच्छी लगी। आचार्य मुनीश का लेख 'आर्यों का आदि देश आर्यावर्त्त' इस बात को सफलतापूर्वक समझाने में कामयाब रहा कि आर्य लोग मूलरूप से भारत के ही निवासी हैं। अंग्रेजों ने भारतीयों में मतभेद पैदा करने के लिए ही यह बात फैलाने की कोशिश की कि आर्य लोग ईरान या मध्य एशिया से भारत में आए थे। उपलब्ध सभी प्रमाण आर्यों का मूल निवास भारत अर्थात् 'आर्यावर्त्त' होने की ही पुष्टि करते हैं। डॉ० मनोज चतुर्वेदी के लेख से नेताजी के बारे में नई जानकारियाँ मिलीं। ईश्वर आर्य ने 'ज्ञान का मूल स्रोत परमेश्वर' लेख में पाठकों का ज्ञान बढ़ाया है। विनोद बंसल का आलेख गुलामी मानसिकता को लताड़ने वाला है। बाल वाटिका के हास्यम् तथा प्रहेलिका अच्छे लगे।

प्रो० शामलाल कौशल
मकान नं० ९७५ बी/ २०, ग्रीन रोड रोहतक-१२४००१

जनवरी अंक के शांतिप्रवाह में जिस कलंक के टीके का उल्लेख किया गया है वह कभी धुलने वाला नहीं है। संस्कारों की शिक्षा केवल समाधान नहीं, वरन् शस्त्रधारी होना आवश्यक है तभी अपराध रुकते हैं। प्रेम विवाह की परिभाषा को तोड़ मरोड़ कर पेश किया गया है। नौजवान लेखक नरेन्द्र सोनी के विचारों ने प्रभावित किया। चाणक्य नीति समाज एवं सत्तावानों के लिए मार्गदर्शक है। डॉ० चतुर्वेदी की नेताजी सुभाष को श्रद्धांजली झकझोरती है। पार्टी प्रधान के चुनाव में गांधीजी से बाजी ले जाने पर भी नेताजी को काम नहीं करने दिया गया। श्री मोहनसिंह ने ४० वर्ष तक संघर्ष करने के बाद आजाद हिन्द के सैनिकों को स्वतंत्रता सेनानी घोषित करवाया। पं० चमूपति की अपूर्व डायरी में धार्मिक/सामाजिक विसंगतियों पर करारी चोट की है। मंत्रों के अनुवाद में सफलता न होने की बात अजीब गोरखधंधा ही कही जा सकती है। लेख के अन्तिम तीन पहरों में खरी खरी सटीक एवं पथप्रदर्शक ज्ञान की शिक्षा देने के लिए पाठकों का नमन। पन्ना १६ बहस को आगे बढ़ाने से बचना सीमित एवं अल्पज्ञान का परिचायक है। पन्ना २५ पर दो लेखक सज्जनों के 'गुड' एवं 'अच्छी नींद' के बारे में लघु लेख बहुमूल्य हैं। बाल-वाटिका में पहला दूजा और चौथा हास्यम् सर्वोपरि हैं। काश! नाजायज कटाई करने वाले पेड़ों के डंकों के शिकार हो जाते! समर्पित के दोहे भगत कबीर की याद दिलाते हैं। पन्ना २७-२८ के प्रेरक प्रसंग मानव को देवता बनाते हैं, परन्तु किसान को हताश होकर समाज सुधार का संकल्प त्यागना नहीं चाहिए था। सम्पादक की भजनावली नैतिक उत्थान की फलती फूलती बगिया है। पूजनीय श्री मनुदेव अभय को पंजाब के पाठकों का हृदय से नमन।

धर्मसिंघ गुलाटी
५४/१३ शक्ति नगर, पटियाला -१४७००३ (पंजाब)

जनवरी अंक में प्रकाशित श्री ईश्वर आर्य के लेख 'ज्ञान का मूल स्रोत परमेश्वर है।' को पढ़कर कई

शंकाओं का समाधान हुआ। एक छोटी सी बात भी हमें समझ में आ जाए कि अभाव से भाव नहीं हो सकता तो हमारी समस्या का समाधान हो सकता है। नैमित्तिक ज्ञान तो मनुष्य को अर्जित ही करना पड़ता है, यह बात तो सूर्य की भाँति प्रत्यक्ष है। लेखक का तर्क निरापद है कि यदि ज्ञान का उत्तरोत्तर विकास होने का सिद्धान्त सत्य होता तो प्रत्येक जाति का वर्तमान उसके अतीत से उत्कृष्ट होता और भविष्य के वर्तमान से अधिक उज्ज्वल होने की गारंटी होती।

विवेकानन्द जायसवाल C/O ओम करियाना
रतू रोड, रांची, ३६गढ़

जनवरी अंक में पर्याप्त ज्ञानवर्धक सामग्री पढ़ने को मिली। विनोद बंसल का लेख 'विदेशी दासता का प्रतीक जनवरी का नया साल' एक कटु सत्य को उजागर करता है। इसे पंचांग सुधार समिति की सिफारिश के विरुद्ध केवल सरलता के नाम पर स्वीकार कर लिया गया। जबकि सरलता गिनती की नहीं, प्रकृति के साथ सामंजस्य की होनी चाहिए थी। देसी चन्द्र महीनों में दिनों का घटना बढ़ना देखने में चाहे जटिलता लगती हो, पर इससे यह सिद्ध होता है कि मास में गिनती पूरी होने का नाम सरलता नहीं बल्कि चांद के परिभ्रमण की अवधि से तारतम्य होना ही इसकी सार्थकता है। खेद है कि आजकल गणित ज्योतिष के अधिकारी विद्वानों के लेख दृष्टिगोचर नहीं होते। वैदिक दृष्टिकोण के ज्योतिषीय विद्वानों की आज गंभीर कमी है।

रोहतास भारद्वाज
९९५, हाऊसिंग बोर्ड, जींद-१२६१०२

शिक्षा के सुधार में ही सम्पूर्ण सुधार निहित है।

❒ **नरेन्द्र सोनी**, ग्राम बिठमड़ा, जिला हिसार

प्राचीनकाल से ही शिक्षा और विद्यार्थी का अनोखा सम्बन्ध रहा है। शिक्षा के बिना किसी भी व्यक्ति का जीवन नरक के समान है। प्राचीन काल में शिक्षा दिमाग के अंदर इकट्ठा करने की बजाए व्यवहार में लाई जाती थी। इसलिए उन्हें सबसे पहले व्यावहारिक शिक्षा दी जाती थी, उन्हें समाज, घर, विद्यालय में रहने के तरीके बताए जाते थे ताकि वे संयमी, सहनशील, विनम्र और ईमानदार बनकर देश और समाज को प्रगतिशील बना सकें। परंतु आज शिक्षा और विद्यार्थी का स्वरूप बदल गया है। आज ४ साल के बच्चे को किताबों से भरे बैग के साथ स्कूल भेज दिया जाता है और उसे किताबी ज्ञान को रटने के लिए कहा जाता है। उसकी खेलने कूदने की उम्र में उसे ट्यूशन पर भेजा जाता है। इससे वह परीक्षा में अच्छे अंक तो ले सकता है लेकिन सभ्य व्यक्ति नहीं बन सकता। उसको माता-पिता का स्नेह नहीं मिल पाता, अच्छी संगति नहीं मिल पाती और समाज में पढ़ा-लिखा अपराधी बना देती है। आज जितने भी जुर्म हो रहे हैं, उनमे से ९० प्रतिशत जुर्म आधुनिक शिक्षा-प्रणाली की विफलता के कारण हो रहे हैं। यह शिक्षा आज की युवा पीढ़ी को संस्कारवान् नहीं बना सकती, तो इसका क्या महत्व? गैंगरेप, रेगिंग, परीक्षा में मुन्ना भाई बनना इसका प्रमाण हैं।

आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था विद्यार्थियों को नौकरी नहीं दिला सकती लेकिन अपराधी का चोला जरूर पहना सकती है। समाज का निर्माण करने वाले यदि असभ्य होंगे तो इसकी जिम्मेदार आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था है। शिक्षा-व्यवस्था में व्यापक बदलाव की जरूरत है। जब बच्चा जन्म लेता है तो उसे किसी चीज का नैमित्तिक ज्ञान नहीं होता। अच्छी और बुरी शिक्षा उसको यह समाज ही देता है। आधुनिक शिक्षा ने इंसान को इंसान नहीं, जानवर बना डाला है। इससे अच्छे तो पशु भी हैं जो अपने परिवार को तो कोई नुकसान नही पहुँचाते। परंतु इंसान तो स्वयं का सबसे बड़ा दुश्मन है। आज की शिक्षा-प्रणाली अंधी हो चुकी है, खोखली हो चुकी है। आधुनिक शिक्षा का ढांचा गिर चुका है। आजकल के युवा, शिक्षक पैसे के लिए बनते हैं, बच्चों के चरित्र-निर्माण के लिए नहीं। ऐसे शिक्षक क्या समाज को सभ्य समाज में तबदील कर सकेंगे?

स्वामी दयानंद जी ने सभ्य समाज के निर्माण के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अपनाने का आह्वान किया था परंतु आजकल के बालक-बालिका गुरुकुल में जाकर रहना ही नहीं चाहते। इसका एक कारण तो गुरुकुलों में समुचित व्यवस्था न होना है और दूसरा रोजगारोन्मुखी न होना है। हमें वैदिक शिक्षा-प्रणाली पर जोर देना चाहिए। प्राचीनकाल में गुरु और शिष्य का रिश्ता कलंकित नहीं था, वहाँ अपनी-२ सीमाएँ थी।

जब सब शिक्षित होंगे तभी देश और समाज शिक्षित होगा। सरकारों को शिक्षा का स्तर बढ़ाने के पूरे प्रयास करने चाहिएँ। महर्षि दयानन्द ने स्वयं सारी उम्र इसके लिए प्रयास किया। अब हमें महर्षि के सपने को पूरा करना होगा।

मस्ताने ज्ञानी

❑पं० चमूपति जी

प्र सोमासो विपश्चितो अपो नयन्त ऊर्मय: वनानि महिषा इव।।२।।

ऋषि :-त्रित: = पूरा तरा हुआ

(सोमास:) भक्ति रस से शराबोर (विपश्चित:) विद्वान् (ऊर्मय:) लहरों की तरह (अप:) प्रजाओं को (प्रनयन्त:) बहा ले चलते हैं। (महिषा वनानि इव) जैसे महान् (बादल) जलों को।

विद्वान् का प्रभाव अविद्वान् पर होना स्वाभाविक है। जनता को ज्ञान नहीं होता। ज्ञान की प्राप्ति विद्वानों से ही होती है। विद्वान् जो लहर चलाना चाहें चला सकते हैं। जातियों के भाग्य का निर्णय इतना ऐतिहासिक घटनाओं ने नहीं किया जितना 'विपश्चितों' विचारकों के विचार ने। विजयशील जातियाँ पराजित हो गईं। क्यों? इसलिए कि उनके विचारक विजय को महत्त्व ही नहीं देते थे। शांतिप्रिय देश आपस में गुत्थम-गुत्था हो गए। क्यों? इसलिए कि उनके दार्शनिकों को बिना गोला बारूद बनाए चैन नहीं पड़ती थी।

विश्व विचारकों की विचार-लहरी पर नाच रहा है। विचारक बादल हैं, प्रजाएँ जल। बादल ने जलों को जहाँ चाहा, बरसा दिया। विचारक भीरू जाति को फिर से वीर बना देते हैं। तीन तेरह हुए देशों को फिर से संगठित कर लेते हैं।

उनके मनन में मोहिनी होती है। वे अपने मनों की लहरों का संचार सम्पूर्ण संसार में करते हैं। पर हाँ, ऐसा हो जाना उसी समय संभव है, जबकि विचारकों का कोई उद्देश्य हो। उनके सामने कोई लक्ष्य हो और उसमें उनकी श्रद्धा हो। वे उसके पीछे मस्ताने हों दीवाने हों। मस्ताने विद्वान् जनता को ले चलते हैं। जनता के लिए श्रद्धा का मद जादू का असर रखता है।

और जो कहीं नेता स्वयं सन्देह का शिकार हुआ, प्रजा उसका अनुसरण नहीं करेगी। सन्देह में संगठन की शक्ति कहाँ है! वह तो दो मिल रहे हृदयों को भी तोड़ फोड़ देता है। प्रजाओं को संशय के सूत्र में पिरोया नहीं जा सकता। संशय का कोई सूत्र ही नहीं। संशय तो नाम ही भिन्न भिन्न तागों के भिन्न भिन्न सिरों का है, जिनका मेल नहीं होता। श्रद्धा रहित तर्क तो एक मनुष्य को भी अनेक दिशाएँ दिखा देता है। अविश्वास में बिखेरने की शक्ति भले ही हो, समेटने की शक्ति नहीं है। संदिग्ध जातियों का संजीवन सोम है। प्रभु का प्यारा प्रभु की महिमा के गीतों से ही बिखरी हुई प्रजा का कल्याण करता है। उसमें रस भरता है। मृतप्राय: जनता में एक नए रस का संचार कर देता है।

प्रजा का प्रेरक है प्रभु का प्यार! यही वह सोम है जो समाज सुधार के रूप में प्रकट होता है। संसार भर की सुधारणाओं के युग श्रद्धा के युग हैं।

क्या ऐसे 'विपश्चित् सोमों' का प्रादुर्भाव हम लोगों में नहीं होता रहा है? होता रहा है और लगातार होता रहा है। ऋषि विपश्चित् सोम ही तो थे। वे थे श्रद्धालु तार्किक। प्रभो! हमें उनका तर्क दिया है तो श्रद्धा भी दो। संशय दिया है तो ज्ञान और भक्ति भी दो। भक्तिमय ज्ञान। ज्ञानमय भक्ति। हम विपश्चित् भी हों,सोम भी।

चाणक्य-नीति

तृतीयोऽध्यायः (गतांक से आगे)

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।।१०।।

कुल परिवार की रक्षा और भलाई के लिए यदि एक व्यक्ति का त्याग करना पड़े तो कर देना चाहिए। ग्राम की भलाई के लिए परिवार का त्याग कर दे। यदि ग्राम के कारण देश की हानि हो रही हो तो ग्राम को छोड़ दे। परन्तु यदि आत्मकल्याण के मार्ग में पृथिवी का राज्य भी बाधक बन रहा हो तो उसे भी छोड़ दे। भाव यह है कि देश और समाज की सेवा के लिए परिवार की मोह ममता को छोड़ देना चाहिए और आत्म कल्याण के लिए तो चाहे कुछ भी छोड़ना पड़े, छोड़ देना चाहिए।

उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं जपतो नास्ति पातकम्।
मौने च कलहो नास्ति नास्ति जागरिते भयम्।।

उद्योग, परिश्रम, पुरुषार्थ करने से दरिद्रता का नाश हो जाता है। परमेश्वर का चिन्तन करते रहने से व्यक्ति पाप से बचा रहता है। मौन रहने से कलह क्लेश नही होता। जागते रहने से भय नहीं होता। भय का मूल कारण अज्ञान है।

अतिरुपेण वै सीता अतिगर्वेण रावणः।
बलिराडतिदानेन अति सर्वत्र वर्जयेत्।।१२।।

अधिक रूपवती होने के कारण सीता का हरण हुआ। अति अभिमान के कारण रावण मारा गया। अतिदान के कारण बलि का पतन हुआ। इसलिए किसी भी कार्य में अति करने से बचना चाहि[illegible] मर्यादाओं का उल्लंघन सदैव हानिकारक होता है।

को हि भारः समर्थानां किं दूर[illegible] व्यवसायिनाम्।
को विदेशः सविद्यानां, कः परः प्रियवादिनाम्।।१३

सामर्थ्यवान् लोगों के लिए कोई भी कार्य बोझ नहीं होता। वे कठिन से कठिन कार्य को भी अनायास की पूर्ण कर देते हैं। व्यवसायी व्यापारी लोग किसी स्थान की दूरी की चिन्ता नहीं करते, वे अपने व्यापार के लिए सहज ही दूर दूर की यात्रा करते हैं। विद्वान् व्यक्ति देश विदेश को अर्थात् पूरी पृथिवी को एक परिवार ही समझता है। प्रिय बोलने वालों के लिए कोई पराया नहीं होता, वे अपने मधुर वचनों से परायों को भी अपना बना लेते हैं।

अमृत वचनावली

प्रीतिशतकम्

❑डॉ॰ रामभक्त लांगायन आई ए एस (सेवानिवृत्त)

क्रोधाक्रोध-घृणा-प्रेम-राग-वैराग्य पक्षकम्।
यस्य संतुलितं भूयात् नूनं ब्रह्मविदेव सः।।३७।।

जैसे- जब तराजू के दोनों पलड़े एक समान हो जाते हैं तो एक संतुलन सध जाता है। ऐसे ही जब जीवन में दोनों पक्ष क्रोध और अक्रोध का, प्रेम और वैराग्य का संतुलन हो जाता है और भीतर का तराजू सध जाता है, उसी क्षण ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

सुहीरकं यथा दिव्यं मनोहारि स्वयं स्वतः।
तथा सरलता दिव्या सज्जाद्याडम्बरं वृथा।।३८।।

जिस प्रकार कोहिनूर सौन्दर्य के लिए अकेला काफी है, उसी प्रकार सरलता व सादगी एक अनुपम उपहार है। एक अनुपम रहस्य है और उसे संवारना व सजाना खोखलापन है।

रागद्वेषादि संलिप्तो जनो न लक्ष्यमृच्छति।
न कदापि तटं यायाज्जलपूर्णा यथा तरी।।३९।।

जैसे जल से पूर्ण नौका तैरकर किनारे पर नहीं जा सकती, उसी प्रकार राग द्वेष से संलिप्त व्यक्ति जीवन का लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता।

स्वयं निजात्मनो नाथः आत्मा ह्यात्मनो गतिः।
तस्माद् संयम्य चात्मानमश्वारोही यथाश्वकम्।।४०।।

आत्मा स्वयं ही आत्मा का स्वामी है और आत्मा स्वयं ही आत्मा की गति है। जिस प्रकार घुड़सवार अश्व को वश में रखता है उसी प्रकार स्वयं को वश में रखने से मनोवाञ्छित लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

निजदोषान् समुत्सार्य परकीय गुणाग्रही।
सुविचारपरो भूत्वा स हि लोके प्रतिष्ठितः।।४१।।

इस संसार में वही मनुष्य प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है, जो कि दूसरों के अच्छे गुणों का अनुसरण करता है और अपने दोषों को छोड़ देता है।

++++

ऋषि की ऐतिहासिक दूरदर्शिता

❑ श्री रघुवीर सिंह जी शास्त्री, पूर्व मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ऋषि देश को एक, अखंड तथा स्वतंत्र देखने की अदम्य साधना मन में लेकर चल रहे थे और इसीलिए उन्होंने जहाँ सारे देश के लिए एक भाषा, एक वेश, एक धर्म, एक देव, एक ग्रन्थ का विचार प्रस्तुत किया, वहीं एक जाति, एक उद्‌गम, एक नस्ल, एक ही संस्कृति का सिद्धांत स्थापित किया।

महर्षि दयानन्द विद्वत्ता तथा अखण्ड ब्रह्मचर्य के दो महान् शास्त्रों से सुसज्जित होकर कार्यक्षेत्र में उतरे और शतियों से अवनति के गर्त में गिरे एवं जर्जरित समाज के उद्धार में लग गए। उन्होंने इस समाज के प्रत्येक रोग का ठीक निदान किया तथा उसके मूल पर कुठाराघात किया। इस दीर्घकालीन दैन्यावस्था मे यद्यपि समय-समय पर अनेक सुधारक महात्मा उत्पन्न हुए, परन्तु वे इसके पुराने रोगों की जड़ न पकड़ सके। ऋषि दयानन्द ही पहले ऐसे महापुरुष जन्मे जिन्होंने इसकी सारी व्याधियों, त्रुटियों अथवा दुर्बलताओं का यथार्थ तथा स्थायी प्रतिकार प्रस्तुत किया।

यहाँ मैं केवल राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में ऋषि की देन की ओर संकेत करना चाहता हूँ। लगातार कई सौ वर्ष तक विदेशियों का प्रभुत्व रहने के कारण भारतवासी दासता के गाढ़े रंग में रंगे जा चुके थे। अशिक्षित लोगों की बात छोड़िए, शिक्षित वर्ग के मस्तिष्क और हृदय दोनों पर भी दासता के संस्कार इतनी गहरी छाप लगा रहे थे कि उनमें अपनी कोई सूझ-बूझ न रह गयी थी। अपनी संस्कृति तथा साहित्य से उनका सम्बन्ध सर्वथा टूट चुका था, अतः विदेशियों द्वारा प्रचलित धारणाओं से ऊपर उठने की क्षमता उनमें न रह गयी थी।

इधर मुसलमानों के पश्चात् आने वाले विदेशी अंग्रेज प्रभु बड़े ही कूटनीतिक तथा व्यापारिक बुद्धि वाले थे। उन्होंने भांप लिया कि कदाचित् कालान्तर में भारतवासियों के मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि अंग्रेज विदेशी हैं और हमारी जन्मभूमि का शोषण कर रहे हैं इसलिए अंग्रेज शिक्षाशास्त्रियों तथा इतिहासकारों ने पहले ही सावधानी कर ली और एक विचारधारा ऐतिहासिक सत्य के नाम पर फैलायी कि आर्य लोग भी इस देश के आदिवासी नहीं हैं, ये भी हमारी ही भांति विदेशी आक्रान्ता तथा शोषक हैं। आर्यों ने भी ईरान से चल इस भूखण्ड पर हमला किया और यहां की द्रविड़, सन्थाल आदि जातियों को मारपीट कर दक्षिण की ओर धकेल दिया। यहीं तक नहीं, उन्हें सामाजिक दृष्टि से सदा के लिए पतित, नीच, राक्षस आदि की संज्ञाएं देकर घृणित जीवन बिताने के लिए विवश कर दिया। क्रान्तदर्शी दयानन्द भारत की राष्ट्रियता पर इस निर्मम प्रहार को देखकर तिलमिला उठे।

> सचमुच बात बिलकुल सीधी-सादी है, यदि आर्यों से पहले इस देश में कोई अन्य जातियां बसती थीं तो इस देश का कोई नाम तो होना चाहिए था।

उन्होंने विदेशियों की इस कूटनीति के दूरगामी दुष्परिणामों को भांप लिया और देशवासियों में सच्ची राष्ट्रियता के जगाने के लिए बड़े ही विश्वासपूर्ण शब्दों में घोषणा की- आर्यावर्त इस देश का नाम इसलिए है कि सबसे पहले आर्यों ने ही इसे बसाया था और इससे पहले इस देश का कोई अन्य नाम नहीं था। कितना बड़ा ऐतिहासिक सत्य है। और उसे सिद्ध करने के लिए तर्क भी कितना अकाट्य उपस्थित किया कि आर्यावर्त से पहले इस देश का कोई अन्य नाम नहीं था। सचमुच बात बिलकुल सीधी-सादी है, यदि आर्यों से पहले इस देश में कोई अन्य जातियां बसती थीं तो इस देश का कोई नाम तो होना चाहिए था।

आज हमारे देश के जो नाम प्रचलित हैं उनमें से आर्यावर्त सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक नाम है। भारतवर्ष राजनीतिक नाम है जो कुरुवंश के एक राजा भरत के नाम पर पड़ा। यहां यह ऐतिहासिक तथ्य भी ध्यान में रखना चाहिए कि 'भारतवर्ष' की सीमा 'आर्यावर्त्त' के क्षेत्र से कहीं अधिक विस्तृत थी। तीसरा नाम 'हिन्दुस्तान' है। यह

उन्होंने समझ लिया था कि जब तक प्रत्येक भारतवासी में यह भावना जाग्रत न होगी कि यह देश आदिकाल से हमारे पूर्वजों की क्रीड़ा-स्थली रहा है--- तब तक सच्ची राष्ट्रियता या देशाभिमान पैदा नहीं हो सकता।

नाम विदेशियों ने रखा है। संस्कृत साहित्य में कहीं भी हमारा नाम हिन्दू नहीं मिलता, इसलिए देश का नाम हिन्दुस्तान होने का तो कोई प्रसंग ही नहीं। खेद है कि ऋषि के आगमन से पहले हम अपने लिए ये दोनों विदेशी नामकरण इस प्रकार स्वीकार कर चुके थे कि मानो सदा से हमारे ये ही नाम हैं। किसी को यह ध्यान रहा होगा कि हमारा वास्तविक नाम आर्य तथा हमारे देश का नाम आर्यावर्त है, यह नहीं कहा जा सकता। मुसलमान शासकों ने हिन्दुस्तान तथा अंग्रेजों ने इण्डिया हमारे देश का नाम रखा और हम इन्हीं दोनों नामों का साभिमान प्रयोग करते हैं। हमारी मस्तिष्क गत दासता ने हमें कितनी दयनीय दशा में धकेल दिया है!

आश्चर्य तो उन ऐतिहासिकों पर है जो यह समाधान करते हैं कि क्योंकि अफगानिस्तान तथा मध्य एशिया की भाषा में हमारी भाषा के 'स' का उच्चारण 'ह' होता है, जैसे सप्ताह के स्थान में हप्ताह आदि उच्चारण होते हैं। इसीलिए जब उधर से आक्रान्ता हमारी सीमाओं में घुसे तब उन्हें सबसे पहले सिन्धु नदी मिली और उसके तट पर बसने वालों को भी उन्होंने सिन्धु अर्थात हिन्दू ही कहकर पुकारा और उनके देश को हिन्दुस्तान कहने लगे। परन्तु उन ऐतिहासिकों के पास इस प्रश्न का क्या उत्तर है कि सिन्धु नदी तो आज तक सिन्धु ही कहलाती है, उसके स को ह नहीं हुआ। उसका प्रदेश भी आज तक सिन्धु कहलाता है, उसका 'स' भी ज्यों का त्यों बना है तो फिर हजारों मील आगे चल कर गंगा, ब्रह्मपुत्र अथवा नर्मदा, कावेरी के किनारे बसने वाले लोगों का नाम हिन्दू अथवा इन प्रदेशों का नाम कैसे हिंदुस्तान को गया।

यहाँ मानना पड़ेगा कि ऋषि दयानन्द की खोज ही यथार्थ है। जब वे कहते हैं कि विदेशी भाषा में हिन्दू शब्द काफिर, पतित लोगों के लिए प्रयुक्त होता था, इसीलिए विदेशियों ने हमारा यह घृणास्पद नाम रखा जिसे हम बड़े गर्व के साथ आत्मसात् किए बैठे हैं। विदेशियों द्वारा दिए गए इस प्रकार के एक अपमानजनक शब्द को किसी जाति ने यदि स्वीकार किया है तो वे हम भारतवासी ही हैं जो अपनी प्राचीनता का भी दम साथ ही भरते हैं।

यद्यपि अंग्रेज तथा उनका साम्राज्य यहां से चला गया, परन्तु उनका यह षड्यंत्र आज भी हमारे राष्ट्र के शरीर को क्षत-विक्षत कर रहा है। दक्षिण के बहुसंख्यक लोग अपने को आर्येतर मानकर हमारे शत्रु हो गए हैं। वे आर्यों को आक्रान्ता, शोषक तथा अत्याचारी मानने लगे हैं, साथ ही प्राचीन वैदिक साहित्य को भी लाञ्छित कर रहे हैं। इधर भी अछूत कही जाने वाली जातियों में इसी प्रकार की भावना राजनीतिक-स्वार्थी भरने में लगे हैं। दक्षिण बिहार, उड़ीसा, मध्य-प्रदेश तथा आसाम के जंगलों में रहने वाली जातियों के लिए आदिवासी शब्द का सरकारी स्तर पर प्रयोग हो रहा है, जिसका सीधा अर्थ यही है अन्य सब लोग पीछे आने वाले विदेशी हैं। इस प्रकार राष्ट्र में वैमनस्य तथा बंटवारे के घृणित बीज अंकुरित हो रहे हैं। भारत-भूमि के खण्ड-खण्ड होने का खतरा मुंह बाए खड़ा दीख रहा है।

ऋषि की दूरदर्शी प्रतिभा ने यह खतरा पहले ही देख लिया था और इसीलिए इस भ्रमपूर्ण ऐतिहासिक दुरभिसन्धि का उन्होंने भंडाफोड़ किया। उन्होंने समझ लिया था कि जब तक प्रत्येक भारतवासी में यह भावना जाग्रत न होगी कि यह देश आदिकाल से हमारे पूर्वजों की क्रीड़ा-स्थली रहा है--- ये वही सिन्धु, गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र आदि हैं जो सदा से इसी प्रकार इस भारत भूमि को सस्यश्यामला बनाने में लगी हैं, तब तक सच्ची राष्ट्रियता या देशाभिमान पैदा नहीं हो सकता। जब देश के प्रति ही ममता बुद्धि नहीं तो फिर अभिमान की क्या चर्चा?

ऋषि देश को एक, अखंड तथा स्वतंत्र देखने की अदम्य साधना मन में लेकर चल रहे थे और इसीलिए उन्होंने जहाँ सारे देश के लिए एक भाषा, एक वेश, एक धर्म, एक देव, एक ग्रन्थ का विचार प्रस्तुत किया, वहीं एक जाति, एक उद्गम, एक नस्ल, एक ही संस्कृति का सिद्धांत स्थापित किया। यही कारण था कि उन्होंने जाति का पुराना नाम आर्य तथा देश का पुराना नाम आर्यावर्त प्रचलित करने का यत्न किया।

खेद है कि ऋषि द्वारा उद्घाटित यह ऐतिहासिक सत्य अभी तक पूरी तरह स्वीकार नहीं हो सका है और आज भी इतिहास के नाम पर दूषित भावनाएं हमारी सन्तति में भरी जा रही हैं। आर्य विद्वानों का कर्त्तव्य है कि वे इस ऋषिसम्मत मन्तव्य को स्वीकार कराने के लिए और अधिक अनुसंधान तथा परिश्रम करें। उससे जहाँ वे ऋषि ऋण से अनृण होंगे, वहीं अपने राष्ट्र की एक ठोस सेवा करने का श्रेय प्राप्त कर सकेंगे।

(गंगाप्रसाद उपाध्याय अभिनन्दन ग्रंथ)

आदिसृष्टि कहाँ

मध्य एशिया, उत्तरी ध्रुव आदि पर आदि मनुष्य की उत्पत्ति की मिथ्या कल्पनाओं के मध्य स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की लेखनी से पढ़िये मानव के आद्य उत्पत्ति स्थान का प्रामाणिक विवेचन -सं०

❏स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

प्रारम्भ में मनुष्य किसी ऐसे स्थान पर पैदा हुआ होगा जहाँ का जलवायु उसके अनुकूल हो, खाद्य-सामग्री सुलभ हो और जहाँ वह अधिक से अधिक सुरक्षित रह सके। मनुष्य ही नहीं पशु, पक्षी, वनस्पति आदि के लिए भी ऐसा ही स्थान उपयुक्त होगा। इस प्रकार आदिसृष्टि के लिए स्थान वह उपयुक्त होगा-

(१) जो संसार में सबसे ऊंचा हो, (२) जहाँ सर्दी और गर्मी जुड़ती हों, (३) जहाँ मनुष्य के खाद्य फल-वनस्पति प्रचुरता से उपलब्ध हों, (४) जिसके आसपास सब रूप-रंगों के विकास के लिए उपयुक्त वातावरण हो और (५) जिसका नाम सबके स्मरण का विषय हो।

ये सभी लक्षण हिमालय पर घटते हैं-

(१) हिमाचल निर्विवाद रूप से सबसे ऊँचा है। कहते हैं कि पहले संपूर्ण पृथिवी जलमग्न थी। उस जल से सबसे पहले वही भमि निकली, उसी में वनस्पति उत्पन्न हुई और उसी पर सबसे पहले मनुष्यादि प्राणियों की सृष्टि हुई।

(२) संसार में ऋतुएं चाहे कितनी कही जाएं, पर सरदी और गरमी दो उनमें मुख्य हैं। यही कारण है कि समस्त भूमंडल में सर्द और गर्म दो ही प्रकार के देश कहे जाते हैं। कुछ प्रदेश दोनों के मिश्रण से बने पाए जाते हैं, तो भी दो में से एक की प्रधानता रहती है। हिमालय पर कश्मीर, नेपाल, भूटान और तिब्बत आदि बसे हुए हैं। इनके निवासी कहते हैं कि वहीं सर्दी ओर गर्मी मिलती है। इसलिए मानव-सृष्टि के लिए हिमालय ही सर्वाधिक उपयुक्त स्थान ठहरता है। वैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्य के आदियुग में मानसरोवर के आसपास का क्षेत्र शीतोष्ण जलवायु से युक्त था। भारतीय साहित्य में भी इसका उल्लेख मिलता है।

(३) मनुष्य का स्वाभाविक प्रधान खाद्य दूध और फल हैं- **पयः पशूनां रसमोषधीनाम्।** दूध पशुओं से और फल वृक्षों से मिलते हैं। जब मनुष्य दूध और फल के बिना और पशु वनस्पति के बिना नहीं रह सकते तो मनुष्य ऐसे देश में उत्पन्न नहीं हो सकता जहाँ ये पदार्थ उपलब्ध न हों। विकासवाद के अनुसार भी वह ऐसे स्थान में पैदा नहीं हो सकता, क्योंकि मनुष्य से पहले वहाँ बन्दर होना चाहिए और बन्दर निश्चित रूप से फलाहारी है। हिमालय ऐसा स्थान है जहाँ मनुष्य के लिए अपेक्षित समस्त पदार्थ सहज उपलब्ध हैं।

कतिपय विद्वानों ने ध्रुव प्रदेश को मनुष्य-जाति का उत्पत्ति-स्थान माना है। बहुत दिन हुए, वार्न साहब ने 'Paradise Found or the cradle of Human Race at the North Pole' नाम की एक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने आदि मानव-सृष्टि का उत्पत्ति-स्थान उत्तरी ध्रुव प्रदेश बताया था।

इसी पुस्तक के आधार पर लोकमान्य तिलक ने 'Arctic Home in the Vedas' लिखी जिसमें उन्होंने ध्रुव प्रदेश को ही आर्यों का मूल निवास-स्थान सिद्ध किया था, परन्तु जब डॉ० काला ने बताया कि तीन लाख वर्ष में पृथिवी की केन्द्रच्युति तीन बार हुई है और उत्तर ध्रुव प्रदेश में तीन बार हिमपात का तूफान भी आया है तब से यह माना जाने लगा है कि ऐसे स्थान में मनुष्य-जाति की आदिसृष्टि नहीं हो सकती। ध्रुव-प्रदेश में वनस्पति भी नहीं होती। मनुष्य की खाल पर ध्रुवीय पशुओं के समान लम्बे बाल भी नहीं होते। इसके विपरीत पसीना निकलने वाले छोटे-छोटे रोम होते हैं। इसलिए वह अतिशीत प्रदेश में रहने वाला प्राणी नहीं है। पूना के पावगी साहब ने यह भी अच्छी तरह सिद्ध कर दिया कि ध्रुव प्रदेश में मनुष्य-सम्बन्धी जो चिह्न पाये गये हैं, उनसे पता चलता है कि वहाँ मनुष्य तब पहुँचा है जब अन्यत्र रहते हुए वह काफी उन्नति कर चुका था। इन सब तथ्यों के होते हुए उत्तर ध्रुव में आदि काल में मनुष्योत्पत्ति की कल्पना नहीं की जा सकती।

(४) मूल स्थान के पास ऐसी विस्तृत भूमि होनी चाहिए जहाँ सब रंग-रूपों के विकास की स्थिति हो और जहाँ रहकर मनुष्य संसार भर में रहने की योग्यता प्राप्त करके पृथिवी में सर्वत्र फैल सके। हिमालय के साथ लगता भारत ऐसा देश है जहाँ सब छहों ऋतुएं वर्तमान रहती हैं। इस सर्वगुणसम्पन्न देश में सब रंग-रूपों के आदमी निवास करते हैं। ऐसे देश के सामीप्य के कारण भी यही प्रतीत होता है कि हिमालय पर ही मनुष्यों की आदिसृष्टि हुई।

(५) सभी देशों में बसने वाले लोगों को किसी न

किसी रूप में हिमालय की स्मृति बनी हुई है। भारतीय आर्यों की हिमालय से और ईरानी आर्यों को भारत से आने की स्मृति आज भी ज्यों-की-त्यों बनी हुई। चरकसंहिता के प्रमाण से सिद्ध है कि आर्य लोग हिमालय से ही भारत में आए थे और बीमार होकर एक बार फिर अपने मूल निवास हिमालय को लौट गए थे। इतना ही नहीं, कुछ समय बाद उनके फिर लौटकर भारत में बसने का भी उल्लेख मिलता है। चरकसंहिता (चिकित्सास्थान ४।३) में लिखा है-

ऋषयः खलु कदाचिच्छालीना यायावराश्च ग्राम्यौषध्याहाराः सन्तः साम्पन्निका मन्दचेष्टाश्च नातिकल्याश्च प्रायेण बभूवुः। ते सर्वासमितिकर्त्तव्यतानामसमर्थाः सन्तो ग्राम्यवास-कृतमात्मदोषं मत्वा पूर्वनिवासमपगतग्राम्यदोषं शिवं पुण्यमुदारं मेध्यमगम्यमसुकृतिभिर्गङ्गाप्रभवममरगन्धर्वकिन्नरानुचरितमने-करत्ननिचयमचिन्त्याद्भुतप्रभवं ब्रह्मर्षिसिद्धचरणानुचरितं दिव्यतीर्थौषधिप्रभवमतिशरण्यं हिमवन्तममराधिपतिगुप्तं जग्मुर्भृग्वङ्गिरोऽत्रिवसिष्ठकश्यपागस्त्यपुलस्त्यवामदेवासित-गौतप्रभृतयो महर्षयः।।

बहुत दिन तक आर्य लोग हिमालय पर रहे। फिर उन्होंने हिमालय से उतर कर भूमि तलाश की। जिस रास्ते से वे आये उस रास्ते का नाम उन्होंने हरद्वार रक्खा। यहाँ आकर वे कुछ दिन तो रहे, पर जलवायु, खानपान आदि के दोष से बीमार होकर फिर अपने मूल निवास हिमालय को लौट गए। परन्तु कुछ काल पश्चात् वे फिर वहाँ आये। अबकी बार उन्होंने यहाँ के जंगलों को काटकर देश को बसने योग्य बनाया और हरद्वार, कुरुक्षेत्र और सरस्वती नदी से लेकर सदानीरा तक जंगलों को जलाकर वहाँ बस गए और इस आबाद क्षेत्र का नाम आर्यावर्त रक्खा।[१]

मैक्समूलर का कहना है कि ईरानियों के पूर्वज ईरान पहुँचने से पहले भारत में बसे थे और यहाँ से ईरान गए थे।[२] इसका एक कारण अवेस्ता में कतिपय ऐसे शब्दों का पाया जाना है जो संस्कृत में नहीं मिलते, पर ईरान से आगे की भाषाओं में मिलते है। व्याख्यासहित उन शब्दों की सूची भी मैक्समूलर ने दी है।[३] ईरान में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों से भी आर्यों के ईरान में जाकर बसने की पुष्टि होती है। वहाँ लिखा है- कुछ हजार साल पहले आर्य लोग हिमालय से[४] उतरकर आये और यहाँ का जलवायु अनुकूल जानकर यहाँ बस गए। ईरान के बादशाह सदा अपने नाम के साथ 'आर्यमेहर' की उपाधि लगाते रहे हैं। फारसी में 'मेहर' सूर्य को कहते हैं। ईरान के लोग अपने को सूर्यवंशी आर्य मानते रहे हैं।

ईरानी साहित्य तथा पुराणों से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है कि असुरों और उनकी भाषा का मूल भारत ही था। स्वयं अवेस्ता में त्वष्टा के वंशजों को 'आर्यव्रज' (आर्यावर्त्त=आर्यनवेजो-Airyana Vaejo-आर्यनिवास) से पलायन का उल्लेख मिलता है कि किस प्रकार देवों के भय से ईरानी १६ देशों में मारे-मारे फिरते रहे। सर्वप्रथम उनका निवास आर्यावर्त्त-आर्यबीजो-आर्यनवेजो ही में था। यहीं से उन्होंने अन्य देशों को प्रस्थान किया।

अनेक जातियाँ हिमालय के दूसरे नाम 'मेरु' का स्मरण भिन्न-भिन्न नामों से करती हैं- भारतीय आर्य 'मेरु', ज़ेन्द भाषावाले 'मौरु', यूनानवाले 'मेरोस', दक्षिण तुर्किस्तान वाले 'मेरुव', मिस्रवाले 'मेरई' और असीरियावाले 'मोरुरव' कहते हैं।

(५) हिमालय पर प्राणियों के शरीरांश बहुतायत से पाये जाते हैं। पृथ्वी पर ऐसा कोई स्थान नहीं है जो हिमालय-स्थित प्राणियों के शेषांगों से अधिक पुराने चिह्न दे सके। इससे प्रमाणित होता है कि हिमालय पर मनुष्य से पहले उत्पन्न होने वाले और उसके जीवन के आधार वृक्ष और गौ आदि पशु पूर्वातिपूर्व काल में उत्पन्न हो गए थे। अतएव हिमालय आदिसृष्टि उत्पन्न करने की पूर्ण योग्यता रखता है। भारत के सुप्रसिद्ध पुरातत्वविद् अविनाशचन्द्र दास ने ऋग्वैदिक इण्डिया में लिखा है- 'आर्यों का आदिदेश कश्मीर ही है।'[५] एक बहुत बड़े शिक्षाशास्त्री की साक्षी से

१-तर्हि विदेथो माथवऽआस। सरस्वत्यां स तत एव प्राङ् दहन्नभीयायेमां पृथिवीं तं गोतमश्च राहूगणो विदेधश्च माथवः पश्चाद्दहन्तमन्वीयतुः स इमाः सर्वा नदीरतिददाह, सादनीरेत्यु-त्तराद् गिरेर्निर्धावति तां हैव नातिदाह तां ह स्म तां पुरा ब्राह्मणा न तरन्त्यनतिदग्धाऽग्निना वैश्वानरेणेति। **शतपथ** १/४/१/१४

२- Chips From a German Workshop, 1967, p. 85-86

3- Maxmueller : Selected Essays on Language, Mythology and Religion, 1981, p. 277-78

४-चन्द हजार साल पेश अज जमाना माजीरा बजुर्गी अज निजाद आर्या अज कोहहाय कफ काज गुजिश्तः वर सरजमीने कि इमरोज मस्कने मास्त कदम निहादन्द। ब चूं आबोहवाय ई सर जमीरा मुआफिक तब खुद याफ्तन्द दरीं जा मस्कने गुजीदन्द ब आं रा बनाम खेश ईरान ख्यादन्द।' (जुगराफिया पंज कितअ बनाम तदरीस दरसल पंजुम इब्तदाई, सफा ७८, कालम १ मतब अ दरसनहि तिहरान, सन् हिजरी १३०९, सीन अव्वल व चहारम अज तर्फ विजारत मुआरिफ व शरशुदः)

5- That this mountaneous Country (Kashmere) and the plains of Saptasindhu were the Ceadle of Aryan race. -Rigvedic India, p. 155

टेलर ने लिखा है – 'मनुष्य जाति की जन्मभूमि स्वर्गतुल्य कश्मीर ही है।'[६] आर्यों के विशुद्ध रूप-रंग के लोग कश्मीर में आज भी बसते हैं।

आदि-मनुष्य और आर्य एक ही हैं। इसलिए बलपूर्वक कहा जा सकता है कि आदिसृष्टि हिमालय पर हुई। नाना पावगी ने अपने खोजपूर्ण ग्रंथ 'आर्यावर्त्तातील आर्यांची जन्मभूमि' नामक ग्रंथ में लिखा है कि हिमालय ही हमारे देवताओं का आदिकालिक जन्मस्थान[७] है। इसी प्रकार दास बाबू ने लिखा है कि 'वेदों में जो उत्तर की ओर के नक्षत्रों का वर्णन है, उससे ज्ञात होता है कि वैदिक ऋषियों ने उन्हें कश्मीर और हिमालय के ऊँचे पहाड़ों से ही देखा था।'[८]

आर्यों के आदिदेश के रूप में सप्तसिन्धव की कल्पना करने वाले विद्वानों ने सरस्वती की घाटी से लेकर सिन्धु तक के प्रदेश को तथा उससे भी पर्याप्त पश्चिम तक के प्रदेश को आदिदेश बताया है, पर इसमें भी सात नदियों के भाग को मुख्य मानकर विचार करें तो सरस्वती से सिन्धु तक के प्रदेश में आर्यों की बस्तियाँ रही होंगी, ऐसा मानना होगा। जब पानी बरसता है तो वह नदियों में बहता ही है। कहीं भी देखकर सामान्य रूप से सब जगह बहने का कथन किया जा सकता है। तब, जैसा कि सम्पूर्णानन्द जी कहते हैं, किसी एक स्थान पर रहते हुए व्यक्ति के लिए आकाश से मूसलाधार बरसते पानी का 'सात' नदियों में बहना दुग्विषय कैसे हो सकता है? या तो उस प्रदेश में जितनी नदियाँ थीं, सबको ठीक-ठीक गिनकर उतनी संख्या का निर्देश किया जाना चाहिए था अथवा सामान्य रूप से कहने पर संख्या का निर्देश अनपेक्षित था। विशिष्ट संख्या निर्देश ऐसे स्थान का निर्देश करता है जहाँ सात नदियाँ एक-दूसरे के आसपास बहती हों। तभी बादलों का गरजना, बिजली का कड़कना और बरसते जल का सप्तसिन्धुओं (सात नदियों) में बहना किसी का दृग्विषय हो सकता है। ऐसा स्थान कहाँ है? सरस्वती से सिन्धु तक फैले प्रदेश का- जिसमें पंजाब व कश्मीर सम्मिलित हैं, उससे सामंजस्य नहीं हो सकता।

भारत मनुष्य जाति की मातृभूमि और संस्कृत यूरोपियन भाषाओं की जननी है, वह हमारे दर्शन की जननी है, अरबो के माध्यम से हमारे गणित की जननी, बुद्ध के माध्यम से ईसाइयत में निहित आदर्शों की जननी, ग्राम-पंचायत के माध्यम से स्वायत्त शासन और लोकतंत्र की जननी है। वास्तव में भारतमाता अनेक रूपों में हम सब की जननी है। -Villiam Durant

हिमालय नाम से अभिहित भूभाग पर्याप्य विस्तृत है। इसमें आर्यों अथवा मानव का सर्वप्रथम प्रादुर्भाव कहाँ हुआ, इसका निश्चय करना आसान नहीं। वेद के आधार पर सप्तसिन्धव की कल्पना इसी भावना से की जाती है कि वह आर्यों का सर्वप्रथम निवास-स्थान है। यदि यह कहा जाय कि वेदों का वर्णन उस समय का है, जब आर्य इतने विस्तृत प्रदेश में फैल गए थे, तब इतने प्रदेश को आदिदेश नहीं कहा जा सकता। आदिदेश उसी को कहना ठीक होगा, जहाँ सर्वप्रथम आर्यमानव का प्रादुर्भाव हुआ। इस प्रदेश का विस्तार अपेक्षाकृत काफी छोटा होना चाहिए।

सर्वप्रथम जिस देश में आर्यजन अथवा मानव का प्रादुर्भाव हुआ या जिसे उनका मूल अभिजन कहना चाहिए, प्राचीन भारतीय साहित्य में उसका नाम 'देवलोक' बताया है। 'उत्तरो वै देवलोक: --- उत्तरयैव देवलोकमवरुन्धे' (शतपथ १२/६/३/७)- उत्तर ही देवलोक है, उत्तर दिशा में ही देवलोक को सीमित करता हूँ। यह उत्तर दिग्विभाग का वही प्रदेश है जहाँ कैलास-मानसरोवर के आसपास सात नदियों का उद्गम स्थान है। वाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड ४३-११-१४) तथा महाभारत में कई स्थलों पर बिन्दुसर का तथा उससे निकलने वाली सात नदियों का उल्लेख हुआ है। मानसरोवर का ही पूर्व अथवा अपर नाम बिन्दुसर प्रतीत होता है, परन्तु इस प्रदेश का सप्तसिन्धु नाम कभी नहीं रहा। जब हम वर्तमान हिमालय के विस्तृत मध्य-भाग

6- Adelung, the father of comparative philosophy, placed the cradle of mankind in the valley of Kashmere which he identified with paradise.
-Tailors Origin of the Aryans, p-9

७- या प्रमाणें सदरीं नमूद केलेल्या सर्वप्रमाणांवरून, हा हिमाचल आमच्या देवादिकांचीही जन्मभूमि होऊन राहिला आहे, असें वावकांच्या लक्ष्यांत सहजी येईल।
- आ० आ० जन्मभमि, पृ० २७२

3- On the other hand, if it refers to the constellation of 'Ursha Major' which is most prominent in the northern parts of India and particularly in the high teble-land north of kashmere and the peaks of Himalaya from which the Vedic bardmay have made his observations, it is not unnatural for him to describe it as placed high above the horizon. - Rigvedic India, p-376

पर दृष्टि डालते हैं तो हमें छोटी सीमाओं में ही एक प्रदेश दिखाई देता है जहाँ सात नदियाँ अधिक से अधिक समीप हैं। उत्तर भारत की साम बड़ी नदियों का उद्गम हिमालय के एक थोड़े से भाग में सीमित है। वे सात नदियाँ हैं- सिन्धु, सतलुज, सरस्वती, गंगा, यमुना, शारदा (पर्वतीय भीतरी भागों में 'काली' नाम से प्रसिद्ध) और ब्रह्मपुत्र। इन नदियों के उद्गम-स्थानों की अधिक-से अधिक दूरी वर्तमान काल में लगभग १५० मील के भीतर सीमित है। यदि सिन्धु से लगाकर ब्रह्मपुत्र तक प्रत्येक नदी के उद्गम-स्थान को छूते हुए एक रेखा खींची जाए तो उसकी आकृति घोड़े के नाल जैसी बन जाएगी। प्राचीनतम काल में वहाँ छोटा-सा समुद्र अथवा पर्याप्त बड़ा सर रहा होगा। भारतीय साहित्य में उसी का नाम बिन्दुसर या ब्रह्मसर मिलता है। वर्तमान में यही प्रदेश मानसरोवर और उसके आसपास का क्षेत्र है। हिमालय के उतने प्रदेश में उत्तर भारत की सात बड़ी नदियों के उद्गम-स्थान हैं जिनका जल पूर्वी और पश्चिमी समुद्र में जाकर गिरता है। अब भले ही वहाँ ऐसी बड़ी झील न हो जिसे हम ऊपर से देख सकें, परन्तु उस प्रदेश की धरती में अनन्त जल-राशि के भण्डार हैं जिससे उक्त नदियों के स्रोत सूख नहीं पाते।

अनन्तर काल में भौगोलिक उथल-पुथल के कारण उस प्रदेश की परिस्थिति में बड़ा भारी अन्तर आया। सरस्वती के प्रवाह की दिशा बदल गई और कुछ दूर चलकर वह गंगा में विलीन हो गई। इस प्रकार कैलास-मानसरोवर के आसपास के क्षेत्र में ही मानवजाति का प्रादुर्भाव हुआ। वही आर्यों का मूल अभिजन था। कालान्तर में वहीं से आर्यजन बढ़ते-बढ़ते हिमालय की निम्न पर्वत श्रेणियों के पश्चिमी और दक्षिणी मैदान-प्रदेश में आ गए। तब उन प्रदेशों के आर्यावर्त एवं भारतवर्ष आदि नाम प्रचलित हुए। प्राचीनकाल में ही कभी आर्यावर्त के अवान्तर प्रदेश ब्रह्मावर्त, ब्रह्मर्षि देश आदि नामों से प्रसिद्ध हुए।[८]

आर्यावर्त्त की सीमाएँ

हिमालय से उतरकर आर्य लोग सीधे वर्तमान में भारत नाम से अभिहित भूखण्ड में आकर बस गए। जिस रास्ते से वे यहाँ आये उस रास्ते का नाम उन्होंने हरद्वार रक्खा। अपने इस निवास-स्थान का नाम उन्होंने आर्यावर्त्त या ब्रह्मावर्त्त रक्खा। मनुस्मृति २/२ में आर्यावर्त्त की सीमाओं का इस प्रकार निर्देश किया गया है-

आ समुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधाः।।

अर्थात्- पूर्व समुद्र से लेकर पश्चिम समुद्र-पर्यन्त विद्यमान उत्तर में हिमालय और दक्षिण में स्थित विन्ध्याचल का मध्यवर्ती देश है, उसे विद्वान् लोग आर्यावर्त्त कहते हैं। सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में इस श्लोक का निर्देश कर आर्यावर्त्त की सीमाओं का निर्धारण करते हुए स्वामी दयानन्द ने लिखा है-'हिमालय की मध्य रेखा से दक्षिण और पहाड़ों के भीतर और रामेश्वरपर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने प्रदेश हैं, उन सबको आर्यावर्त्त इसलिए कहते हैं कि यह आर्यावर्त्त देश देवों अर्थात् विद्वानों ने बसाया और आर्यजनों के निवास करने से आर्यावर्त्त कहाया।' आजकल विन्ध्याचल को उत्तर और दक्षिण भारत को पृथक् करने वाला पर्वत माना जाता है। वास्तव में यह पूर्वी और पश्चिमी घाट नामक पर्वतमाला का नाम है। तभी स्वामी दयानन्द ने 'रामेश्वरपर्यन्त' शब्दों का प्रयोग किया है। इसमें वाल्मीकि रामायण की यह साक्षी है-

हृष्टपक्षिगणाकीर्णः कन्दरान्तरकूटवान्।
दक्षिणस्योदधेस्तीरे विन्ध्योऽयमिति निश्चयः।।

-कि० का० ६०/७

अर्थात्- प्रसन्न पक्षियों के झुण्डों से भरपूर और कन्दराओं से परिपूर्ण दक्षिण समुद्र के तट पर यह निश्चित ही विन्ध्याचल है।

इससे स्पष्ट है कि पुरातन काल में विन्ध्याचल उस पर्वतमाला का नाम था जिसे आजकल पूर्वी घाट व पश्चिमी घाट कहते हैं।

वराहमिहिर ने अपनी बृहत्संहिता (अध्याय ४) में लिखा है-

भारतवर्षे मध्यात्प्रागादि विभाजिताः देशाः।
अथ दक्षिणे लंकाकालाजिनसौरिकीर्णकालीकटाः।।

अर्थात्- भारतवर्ष में मध्य से पूर्वादिदेशों का विभाग है और दक्षिण में लंका, कालाजिन, सौरिकीर्ण तथा कालीकट देश हैं। वार्हस्पत्य अर्थशास्त्र में भारतवर्ष के विषय में लिखा है-

सहस्रयोजनो बदरिकासेत्वन्तः। द्वारिकादिपुरुषोत्तम सालग्रामान्तः सप्तशतयोजनः। तत्रापि रैवतकविन्ध्यसह्यकुमार मलयश्रीपर्वतपरियात्राः सप्त कुलाचलाः। गंगा सरस्वती कालिन्दी गोदावरी कावेरी ताम्रपर्णी कृतमालाः कुलनद्यश्च।। -७९/८२

अर्थात्- बदरिका से लेकर सेतुबन्ध (रामेश्वर) तक हजार योजन है। द्वारिका से लेकर पुरुषोत्तम सालग्राम (पुरी) तक सात सौ योजन है। उसमें रैवतक, विन्ध्य, सह्य, कुमार, मलय, श्रीपर्वत तथा परियात्र ये सात कुलपर्वत हैं; और गंगा, सरस्वती, कालिन्दी, गोदावरी, कावेरी, ताम्रवर्णी

८- मनुस्मृति २/१७-२२; पातंजल व्याकरण महाभाष्य २/४/१० व ६/३/१०९

तथा कृतमाला कुल सात नदियाँ हैं। इस पर विचार करने से ज्ञात होता है कि आर्यावर्त्त की सीमा कहाँ तक है। इस प्रकार आर्यावर्त्त और भारत अभिन्न हैं, एक हैं।

जब से यह मान्यता जोर पकड़ने लगी है कि भारतीय आर्यों के किसी भी प्राचीन ग्रंथ से, उनकी किसी कथा-कहानी से या उनकी किसी भी बात से यह नहीं पाया जाता कि वे किसी गैर देश से आये, तब से आर्यों के मूल देश कश्मीर तथा हिमालय के आसपास होने की मान्यता बल पकड़ रही है। महाभारत में लिखा है-

हिमालयाभिधानोऽयं ख्यातो लोकेषु पावनः।
अर्धयोजनविस्तारः पंचयोजनमायतः।।
परिमण्डलोर्मध्ये मेरुरुतमपर्वतः।
ततः सर्वाः समुत्पन्ना वृत्तयो द्विजसत्तम।।
ऐरावती वितस्ता च विशाला देविका कुहू।
प्रसूतिर्यत्र विप्राणां श्रूयते भरतर्षभ।।

अर्थात्- संसार में पवित्र हिमालय है। इसमें आधा योजन चौड़ा और पांच योजन घेरेवाला 'मेरु' है जहाँ मनुष्यों की उत्पत्ति हुई। यहीं से ऐरावती, वितस्ता, विशाला, देविका और कुहू आदि नदियाँ निकलती हैं। इन प्रमाणों में हिमालय के मेरु प्रदेश में आदिसृष्टि होने का वर्णन है।

इससे भी अधिक पुष्ट प्रमाण हमें इस विषय में मिले हैं जिनसे अमैथुनी सृष्टि के हिमालय में होने का निश्चय होता है। जिस मेरु स्थान का महाभारत के उक्त श्लोकों में निर्देश किया गया है, उसी के पास 'देविका पश्चिमे पार्श्वे मानसं सिद्धसेवितम्' अर्थात् देविका के निवास के पश्चिमी किनारे पर 'मानस' है। यह मानस अब एक झील है जो तिब्बत के अन्तर्गत है। स्वामी दयानन्द ने सन् १८७५ में सत्यार्थप्रकाश में लिखा था-"मनुष्यों की आदिसृष्टि त्रिविष्टप् अर्थात् तिब्बत में हुई और आर्यलोग सृष्टि के आदि में कुछ काल पश्चात् तिब्बत से सूधे इसी देश (भारत) में आकर बसे। इसके पूर्व इस देश का कोई भी नाम नहीं था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे।'

इस आलेख में जो कुछ कहा गया है उससे स्वामी दयानन्द के कथन की पूरी तरह पुष्टि होती है। सम्भवतः इसी भावना से प्रेरित होकर मैक्समूलर ने लिखा- 'यह निश्चित हो चुका है कि हम सब पूर्व से ही आये हैं इतना ही नहीं, हमारे जीवन की जितनी भी प्रमुख और महत्त्वपूर्ण बाते हैं, सब की सब पूर्व से ही मिली हैं। ऐसी स्थिति में जब हम पूर्व की ओर जाएँ तभी हमें यह सोचना चाहिए कि पुरानी स्मृतियों को संजोये हम अपने पुराने घर की ओर जा रहे हैं।'[९]

फ्रांस के महान् सन्त एवं विचारक क्रूजे (Cruiser) ने बलपूर्वक लिखा है-

'यदि कोई देश वास्तव में मनुष्यजाति का पालक होने अथवा उस आदि-सभ्यता का, जिसने विकसित होकर संसार के कोने-कोने में ज्ञान का प्रसार किया है, स्रोत होने का दावा कर सकता है, तो निश्चय ही वह देश भारत है।'[१०] क्रूजे की इस भारत-स्तुति का कारण स्पष्ट करते हुए विलयम दुरां (Villiam Durant) ने कहा है- 'भारत मनुष्य जाति की मातृभूमि और संस्कृत यूरोपियन भाषाओं की जननी है, वह हमारे दर्शन की जननी है, अरबो के माध्यम से हमारे गणित की जननी, बुद्ध के माध्यम से ईसाइयत में निहित आदर्शों की जननी, ग्राम-पंचायत के माध्यम से स्वायत्त शासन और लोकतंत्र की जननी है। वास्तव में भारतमाता अनेक रूपों में हम सब की जननी है।'[११] इस प्रकार जिस भारत को विश्वभर का आदिदेश होने का गौरव प्राप्त है, उसका आर्यो का आदिदेश होना तो स्वतः सिद्ध है।

(प्रस्तुत आलेख स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (पूर्वनाम प्रिं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) की पुस्तक 'सृष्टि विज्ञान और विकासवाद' का सम्पादित अंश है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए प्रकाशक से सम्पर्क करें।

गोविन्दराम हासानन्द
४४०८, नई सड़क दिल्ली-६
दूरभाष : ०११-२३९७७२१६, ०११-६५३६०२५५

9- We all come from the East- all that we value most has come to us from the East, and by going to the East, everybody ought in feel that he is going to his 'old home' full of memories, if only we can raed them.

- India: what can it teach us /, p-

10- If there is a country which can rightly claim the honous of being the cradle of human race or at least the scene of primitive civilisation, the succesive developments of which carried into all parts of the ancient world, and even beyong, the blessings of knowledge which is the second life of man, that country assuredly is India.

11- India was the Motherland of our race and Sanskrit the Mother of Europeon languages, she was the mother of our philosophy; Mother, through the Arabs, of much of our Mathematics; Mother, through the Budha, of the ideals embodied in Christianity; Mother, through the village community, of self-government and democracy. Mother India is in many ways the mother of us all.

आर्य इसी देश के मूल निवासी हैं

हडप्पा संस्कृति आर्य संस्कृति से प्राचीन नहीं है। आर्यों के आक्रमण और उनके द्वारा हडप्पा संस्कृति को विनष्ट करने के सिद्धान्त साक्ष्यों के विरुद्ध हैं।

प्रस्तुति : प्रवीण कुमार आर्य

प्रख्यात मार्क्सवादी चिन्तक डॉक्टर रामविलास शर्मा और समालोचक नामवर सिंह की कवि मंगलेश डबराल और अच्युतानंद जी की उपस्थिति में हुई बातचीत के प्रमुख अंश तद्‌भव (साहित्यिक पत्रिका, अंक-२५)से साभार

नामवर सिंहः- ---आर्य इस देश के निवासी हैं। हड़प्पा और ऋग्वेद की सभ्यता में अंतर नहीं है। एक ही सभ्यता है ऋग्वेद के रूप में आर्यों की, जो हड़प्पा की नगर सभ्यता- तथाकथित नगर सभ्यता के रूप में है। ये सारी बातें संघ परिवार की सारी संस्थाएं भी कह रही हैं। मेरी पीढ़ी के लोग और नवयुवक लोग- सभी की तरफ से मैं यह जानना चाहता हूं कि आपका एजेण्डा और उन लोगों का एजेण्डा जिन्होंने बाबरी मस्जिद गिरायी थी एक ही दिखाई पड़ता है, क्यों? यह सिर्फ संयोग है? क्या इसमें सम्बन्ध है? यह हम जानना चाहते हैं जो आपको पथ प्रदर्शक के रूप में देखते हैं।

डॉ॰ रामविलास- हिटलर का जब अभ्युदय हुआ तब उसने जर्मन संस्कृति को उद्‌धृत करके जनता में लोकप्रियता हासिल की थी या नहीं! दिमित्रेव ने जो कुछ हिटलर के विरुद्ध लिखा उसमें उसने इस बात की ओर ध्यान दिलाया था या नहीं कि जर्मनी के कम्युनिस्टों को अपनी संस्कृति का अध्ययन जिस तरह करना चाहिए था, उस तरह से उन्होंने नहीं किया और इस तरह से नात्सियों को यह अवसर मिला कि उस संस्कृति को विकृत करके जनता को गुमराह करें। यदि फासिस्टवाद से लड़ना है तो संस्कृति की तरफ ध्यान देना जरूरी होगा। इस सम्बन्ध में स्थिति यह है कि कम्युनिस्ट पार्टी चाहे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी हो या सी॰ पी॰ आई॰ एम॰- इनकी जो कांग्रेसें होती हैं उनमें संस्कृति का कोई कार्यक्रम रहता है क्या? इतिहास के प्रति कौन-सा दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, क्या इसकी तरफ उन्होंने ध्यान दिया है? भारत जैसे देश में अपनी संस्कृति का अध्ययन किये बिना वामपक्ष कैसे यह आशा करता है कि आर॰ एस॰ एस॰ का मुकाबला करे? ये तो भूमिका है। अब जो उनके दृष्टिकोण और मेरे दृष्टिकोण में अन्तर है वह बताता हूँ- जितने हमारे पूंजीवादी इतिहासकार और मार्क्सवादी इतिहासकार हैं वे आर्यों को एक अखंड इकाई मान कर चलते हैं। भारत में आर्य आये कि नहीं आये, ये प्रश्न वे करते हैं। हमारा कहना है कि भारत में आर्यों की कोई अखंड इकाई नहीं थी। नस्ल के आधार पर कभी भी भारतीय समाज या संसार के किसी भी समाज का संगठन नहीं हुआ है। तुम्हारा जितना ऐतिहासिक भाषा विज्ञान है, वह द्रविड़ परिवार पर काम करता है तो नस्ल के आधार पर, इण्डो योरोपियन परिवार पर काम करता है तो नस्ल के आधार पर। वे समझते हैं कि एक भाषा परिवार शून्य से विकसित होता है और दूसरे भाषा परिवारों से उनका सम्पर्क नहीं होता है, इसलिए द्रविड़ तत्त्व आर्यभाषा में हो, यह उनके लिए कल्पनातीत है। आर्य भाषाओं में इसलिए है कि आर्यों ने द्रविड़ों को जीता है लेकिन ग्रीक भाषा में द्रविड़ भाषा के तत्त्व हो सकते हैं, फारसी में द्रविड़ भाषा के तत्त्व हो सकते हैं- ये उनके लिए कल्पनातीत है। इस विषय पर लोगों ने काम किया है। मेरे अलावा काम किया है लेकिन उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

नामवर सिंह- डाक्टर साहब...

डॉक्टर रामविलास शर्मा- एक मिनट, मैं पूरी बात कर लूं। 'भाषा और समाज' मेरी पुस्तक सन १९६१ में प्रकाशित हुई उसमें मैंने इस बात का खंडन किया कि किसी आदि भाषा से अन्य भाषाओं का विकास होता है। किसी आदि इंडो योरोपियन भाषा से योरोप की और भारत की भाषाओं का विकास हुआ, इस धारणा का मैंने खंडन किया। आदि भाषा की कल्पना हिन्दू राष्ट्रवादियों में है और पूंजीवादी तथाकथित वैज्ञानिक चिन्तकों में भी है। हम गणभाषाओं की बात करते हैं। यहाँ मगध गण था, यहाँ भरतगण था, पुरु गण था, पांचाल गण था। जिन लोगों ने संस्कृति पर लिखा है वे मानते हैं कि संस्कृत का केन्द्र पहले सारस्वत प्रदेश में था वो फिर बाद में खिसक कर, कुरुक्षेत्र में, दक्षिण

में, कान्यकुब्ज प्रदेश में आया। वह क्यों खिसका, इसका वे कारण नहीं बताते। मैं कारण बताता हूं। सातवलेकर ने लिखा है कि ऋग्वेद के बाद भरत इतिहास से गायब हो जाते हैं, इसका वे कोई कारण नहीं बताते। मैं कारण बताता हूं, जल प्रलय के कारण भरत सारस्वत क्षेत्र छोड़ कर भागे। मुझसे पहले ये बात भगवान सिंह ने लिखी थी। मैंने उनका समर्थन किया है।

नामवर सिंहः- --- जो मुख्य मुद्दा है, उसको लें, क्योंकि यह बहुत विस्तार हो रहा है। सवाल है कि आर्य किधर से आये या आर्य यहां से बाहर गये। वे यहां के मूल निवासी थे? या नहीं? जिन संघ वालों का मैंने नाम लिया है, मंथन नाम की शोध पत्रिका में उन्होंने कहा है कि यह सिर्फ एकेडमिक दिलचस्पी की चीज नहीं है। बल्कि इट हैज रिस्पांस बियरिंग ऑन कंटेम्परेरी इंडियन पॉलिटिक्स। साफ साफ कहते हैं वे कि इसका राजनीतिक निहितार्थ है। वह राजनीतिक निहितार्थ जिसे अंग्रेजी में जिनोफोबिया कहते हैं। कहने का अर्थ कि जो आर्य की संतान हैं- वे तो हुए देशी, स्वदेशी, भारतीय हुए इसलिए जो विदेशी तत्त्व हैं- शत्रु हैं हमारे- उनके प्रति नफरत, डर का भाव पैदा हो। इसीलिए मैंने कहा कि जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की राजनीति निकलती है उसकी परिणति बाबरी मस्जिद के ध्वंस में होती है। मगर यहां मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि मार्क्सवादी इतिहासकार रामशरण शर्मा हैं, अन्य भी अनेक लोग हैं जो आर्यों के बाहरी या मूल निवासी होने की समस्या पर विचार करते रहे हैं। आपके सामने वे सारे संदर्भ मौजूद हैं। और आपसे कहने की जरूरत नहीं कि पश्चिमी देशों में भी जो भारत विद्याविद हैं- पुरातत्वविद हैं उनमें से भी बहुत से हैं जो मानते हैं कि आर्य यहीं के थे लेकिन इस मान्यता से दो राजनीति निकलती हैं। एक कि आर्य विदेशी हैं, इसी के आधार पर अंग्रेजों ने अर्थ निकाला कि आर्य बाहर से आये, जीते, हम भी बाहर से आये, आपको परास्त किया तो हमारा हक है। यह उपनिवेशवादी राजनीति है। इसके बरक्स दूसरी राजनीति यह निकलती है कि आर्यों को यहां का मान लिया जाए तो जो बाहरी हैं- बाहर से आये उनको खदेड़ो। ये शत्रु हुए। तो आपकी इस स्थापना से कि आर्य भारत के मूल निवासी हैं, मान लेने से जो राजनीति निकलती है कहीं न कहीं आपके ग्रंथों में, तो आपकी तरफ से होना चाहिए कि वह उस राजनीति के साथ नहीं है। उसका खंडन स्पष्ट रूप से किया जाना चाहिए।

डाक्टर रामविलास शर्मा- बुनियादी ध्येय किस तरह का है और यह कि हिन्दू राष्ट्रवाद से किस तरह लड़ना चाहिए। हिन्दू राष्ट्रवाद के लिए वैदिक भाषा आदि भाषा है। इससे भारत की सभी भाषाएं निकलती हैं। भारत की नहीं तो आर्य भाषा परिवार की सारी भाषाएं तो निकली ही हैं। ऐतिहासिक भाषाविज्ञान भी यही कहता है। पूंजीवादी भाषा विज्ञान और हिन्दूवादी भाषाविज्ञान दोनों यही बात कहते हैं कि वैदिक भाषा से सभी भारतीय भाषाएं निकली हैं। मैं गण भाषाओं की स्थापना सामने लाता हूं और कहता हूं कि गण भाषाओं में शब्द भंडार की भिन्नता है। व्याकरण की भिन्नता है और भारतीय आर्य भाषाएं किसी एक आदि भाषा से नहीं निकलीं, इसलिए तुम वैदिक संस्कृति को हिन्दू संस्कृति नहीं कह सकते। मराठी में तीन लिंग होते हैं, बंगला में एक भी नहीं होता और दोनों भाषाएं संस्कृत से निकली हैं इसको तुम स्वीकार कर सकते हो, मैं नहीं स्वीकार कर पाता।------

--- मैंने 'ऐतिहासिक भाषाविज्ञान' में यह उद्घाटित किया कि जो प्राचीन गण भाषाएं हैं उनकी विशेषताएं संस्कृत से भी पहचान सकते हो, ऋग्वेद से भी पहचान सकते हो और उन भाषाओं के विकसित रूप हमारी आज की भाषाओं में दिखाई देते हैं। तुम जो एक सामान्य भूमि की बात करते हो, आर्यों के आक्रमण की बात करते हो, उसका अंग्रेजों ने कितना लाभ उठाया, इस पर तुमने ध्यान दिया है? रामस्वामी पणिक्कर ने जो सारा आंदोलन चलाया वह उत्तर भारत के विरोध में था और उसका आधार ये स्थापना थी कि आर्यों ने बाहर से आकर द्रविड़ों को गुलाम बनाया और द्रविड़ सभ्यता का नाश किया। देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय ने द्रविड़ सभ्यता के बारे में भी कुछ लिखा है। उसमें उन्होंने मान लिया है कि हड़प्पा सभ्यता द्रविड़ सभ्यता थी और आर्यों ने आकर उसका विनाश किया। ह्विलर ने ये बात कही थी, ह्विलर ने अपनी बात वापस ली लेकिन देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय ने ह्विलर की आलोचना की कि ये डर गए और जो सही स्थापना थी उसे वापस ले लिया। यानि द्रविड़ों को आर्य जब तक न जीतें तब तक भाषाविज्ञान, इतिहास विज्ञान का विकास नहीं? इससे केवल आर्य द्रविड़ों का संघर्ष नहीं शुरू होता बल्कि शूद्र ब्राह्मण का संघर्ष भी शुरू होता है। आर्यों ने द्रविड़ों को, आदिवासियों को शूद्र बनाया, दास बनाया, वर्ण व्यवस्था कायम की, इसलिए आर्यवाद का विरोध करने के लिए इतनी बातें हुईं। हालांकि मार्क्स ने लिखा है कि जातिप्रथा की व्यवस्था यहां ही नहीं बाहर भी थी लेकिन जातिप्रथा की जांच न करके आर्यवाद का विरोध किया गया। यानि की आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया और भारत को जीता। इससे सामंतवाद लाभ उठाता है, साम्राज्यवाद लाभ उठाता है। मैं उक्त धारणा का खंडन करता हूं तो तुमको लगता है कि मैं हिन्दू राष्ट्रवाद का

समर्थन कर रहा हूं।---------

नामवर सिंह– मैं सिर्फ यह कह रहा हूं कि मूल निवासी यहां के आर्य भी हैं, तमिल भाषी भी हैं– द्रविड़, यही नहीं बल्कि आदिवासी जातियां जिन पर आपने 'प्राचीन भारतीय भाषा परिवार और हिन्दी' वाली किताब में कई बार लिखा है, उनमें से कई का दावा है कि आदिवासी तो हम हैं। अब ये सारे हैं इसलिए आर्यों को आदिवासी साबित कर देनें से– यहां के मूल निवासी साबित कर देने से समस्या नहीं सुलझती।

डाक्टर रामविलास शर्मा:– इस तरह सुलझती है कि आर्य भाषा पर मुंडा भाषा परिवार का प्रभाव पड़ा था कि नहीं। वैदिक भाषा में मुंडा भाषा के तत्व हैं या नहीं, यह बात मैंने सबसे पहले कही थी। द्विवचन का प्रयोग मुंडा भाषा की विशेषता है। ग्रीक भाषा में द्विवचन का प्रयोग बहुत होता है। ये द्विवचन का प्रयोग इन्होंने वहां से सीखा। यहां की वाक्य रचना क्रिया से आरम्भ होती है यह विशेषता मुंडा भाषा में थी, बाद में कर्ता से वाक्य रचना आरम्भ हुई, ये सारी बातें मैंने लिखीं हैं। इन सबको छोड़कर आर्य बाहर से आए और उनका यहां का मूल निवासी होना हिन्दू राष्ट्रवाद है इसी पर तुम ध्यान केन्द्रित कर रहे हो, मैं इसका विरोध करता हूं।---------

नामवर सिंह:– ---दरअसल सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का एक लम्बा प्रोग्राम है जिसमें शिक्षानीति में परिवर्तन, इतिहास का पुनर्लेखन – मुख्य कार्यक्रम हैं। ये सारी की सारी चीजें जहां जाती हैं उसमें लोगों को लगता है कि परोक्ष रूप से ही सही– आपकी पुस्तकों से परोक्ष रूप से ही सही उन्हें समर्थन मिलता है। दूसरी ओर इनका विरोध करने वाले इतिहासकार और पुरातत्वविद् हैं जो संघ परिवार से टकराते हैं। आप इन इतिहासकारों के साथ नहीं खड़े होते?

डाक्टर रामविलास शर्मा– ये लोग हिन्दी जाति का अस्तित्व स्वीकार करते हैं? ऋग्वेद से लेकर कालिदास और निराला तक ये साहित्यिक सम्पदा– सारी पैदावार– हिन्दी प्रदेश की है, स्वीकार करते हैं? रामशरण शर्मा की पुस्तक 'आर्य संस्कृति की खोज' में कहीं भी भरतों का नाम है? भरत नाम का एक गण था, यह बात कहीं स्वीकार की है? ट्राइब्स और ट्राइब्स के बाद जो जनजातियां पनपीं उनका नक्शा कहीं इनके दिमाग में है? इनमें और हिन्दू राष्ट्रवादियों में एक सामान्य भूमि है– जातियों का अस्वीकार। ये आर्यो के बाहर से आने और भीतर बसने की बात तो करते हैं लेकिन आर्य किन गणों में विभाजित थे– विभिन्न गणों को हम आर्य का नाम देते हैं– पर उनकी संस्कृतियों और उनकी भाषाओं में फर्क था– वे आपस में लड़ते थे– ये बात वे कहीं लिखते हैं? नहीं लिखते। मैं लिखता हूं। अब देखो न मैं इसके लिए क्या करूं।

नामवर सिंह:– देखिए यह बातचीत का मुद्दा नहीं है...

डाक्टर रामविलास शर्मा– बातचीत का मुद्दा यह है कि हम जो लिख रहे हैं उससे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हिन्दू राष्ट्रवाद लाभ उठाता है! तुम्हारा कहना यह है न?

नामवर सिंह:– जी!

डाक्टर रामविलास शर्मा:– और मेरा कहना है कि मैं जो लिख रहा हूं वह हिन्दू राष्ट्रवाद का बिल्कुल उल्टा है, तुम उसे न समझो तो मैं क्या करूं?

नामवर सिंह– डाक्टर साहब अब इसी के साथ यह मुद्दा भी साफ हो जाए। क्योंकि आर्यों वाला मुद्दा ही मैंने नहीं उठाया था, मैंने यह प्रश्न उठाया था कि क्या हड़प्पा संस्कृति और आर्य संस्कृति एक ही है?

डाक्टर रामविलास शर्मा– मैं ऐसा नहीं कहता कि दोनों एक ही हैं। भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश में मैंने यह विस्तार से स्पष्ट किया है कि ये मगधों की संस्कृति है। मगध लोग इतिहासकारों की दृष्टि से बाहर रहे। मेरा कहना है कि वेदों में जो आर्य भाषा वाले नाम मिलते हैं। श्रुतियों में सूर्य में को यश कहा गया है। ये शकार कहां से आ गया। और एक जगह नहीं पचास जगह आया है। ये एक प्रमाण है, मगध लोगों के बाहर जाने का। और ये मगध लोग यहां पुरोहितों का काम करते थे। मैजिक शब्द मग से निकला है। ईसामसीह के जन्म के समय जो राजा गये थे वे सब ईरान से गये थे और ये मगध लोग तंत्र मंत्र में बहुत पहले से दीक्षित थे। मेरा कहना है कि शिश्न देवा कह कर जिनकी निन्दा की गयी है वे मगध लोग हैं। मेरा कहना यह भी है कि रामायण की जो कथा है मूलतः मगधों और कोसलों के युद्ध की कथा है। जो जनस्थान है हमारा है, ये बलिया से चल कर मिथिला तक फैला हुआ है और मध्यप्रदेश में इंदौर से उडुपी तक फैला हुआ है। कोसल के कवियों ने क्या किया, मगधों से लड़ाई थी तो सबको राक्षस बना दिया। कोसलों और मगधों के युद्ध को उन्होंने मनुष्य और राक्षसों का युद्ध बना दिया। जो वानर थे ये भी मगध के लोग थे। सुग्रीव जब अपना संदेश भेजते हैं तो रावण को अपना भाई कहते हैं। इनके रंगरूप का जो वर्णन किया गया है वाल्मीकि रामायण में वह भी मिलता जुलता है। महाभारत में इस तरह राक्षसों से युद्ध नहीं होता, मनुष्यों से युद्ध होता है।

नामवर सिंह:– डाक्टर साहब यह जान कर बहुत खुशी हुई कि अपनी किताब में मगध के बारे में विस्तार से लिख

रहे हैं और विनोद का प्रसंग यह है कि आप कोसलवादी आदमी हैं– कोसल के रहने के कारण और मगध के राहुल जी... आपने कहा है कि उनका भोजपुरी प्रेम गुमराह करता है तो दोनों में युद्ध हुए ... सवाल है कि ये मगध वाले हड़प्पा के हैं या कहां के हैं?

डाक्टर रामविलास शर्मा:– मेरा मानना है कि ये मगध वाले महाराष्ट्र के हैं। मय का पूर्व रूप है मरा। ये जितने इमारतें बनाने वाले लोग थे, सब मगध के थे।

नामवर सिंह:– इस प्रकार आप हड़प्पा की संस्कृति को जो अब तक भिन्न मानी जाती थी, मातृ सत्तात्मक, नगर सभ्यता– उसका समाहार आप किसी न किसी रूप में ऋग्वेद में कर देना चाहते हैं, यही दिक्कत है। सारा झगड़ा इसी बात का है।

नामवर सिंह:– डाक्टर साहब, हो सकता है आपकी बात सही हो। उस पर मैं विचार करूंगा। बाद में। अभी तो मैं मूल विषय पर बात करता हूं कि अब तक यह समझा जाता था कि हड़प्पा संस्कृति अधिक प्राचीन है, पुरातत्व से प्रमाणित है कि अधिक प्राचीन है ऋग्वेद से। इस संदर्भ में युद्ध की भी कल्पना की गई कि आर्य आये और उन्होंने मारा, इसलिए कंकाल मिलते हैं लेकिन बाद में कहा कि नहीं ऐसा नहीं है। आर्यों का आगमन तो ठीक है, लेकिन हड़प्पा संस्कृति को नष्ट करने का श्रेय या दुश्रेय उनको नहीं है, लेकिन पुरानी है हड़प्पा सभ्यता, ऋग्वेद की उसके बाद की है। अब हड़पने के लिए उसको कि वह भी एक तरह से आर्य संस्कृति का ही अंग है और ऋग्वेद के काल को हड़प्पा संस्कृति से कई हजार साल पहले का साबित करने की कोशिश...

मंगलेश डबराल:– एक बात मैं जोड़ना चाहता था कि हड़प्पा सभ्यता के पुरातात्विक साक्ष्य तो शायद ज्यादा हैं लेकिन वैदिक सभ्यता उससे प्राचीन थी, इसके साहित्यिक सांस्कृतिक साक्ष्य बहुत हैं पर पुरातात्विक साक्ष्य शायद नहीं हैं।

डाक्टर रामविलास शर्मा:– आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया। वैदिक सभ्यता यदि बाद की होती तो उसके पुरातात्विक साक्ष्य आपके पास होते। हड़प्पा सभ्यता पहले की है, उसके साक्ष्य आपके पास हैं और वैदिक सभ्यता बाद की है उसके साक्ष्य आपके पास नहीं हैं यह बहुत आश्चर्य की बात है। चूंकि यह सभ्यता बहुत पहले की थी...

मंगलेश डबराल:– कैसे निष्कर्ष तक पहुंचा जाये?

डाक्टर रामविलास शर्मा– सरस्वती पर ध्यान केन्द्रित कीजिए और सरस्वती पर जो कुछ लिखा गया है उसे मिलाइए ऋग्वेद से। ऋग्वेद में सरस्वती का वर्णन बहुत जगह है। ऋग्वेद में ही नहीं यजुर्वेद में भी है। सरस्वती में कई नदियां आकर मिलती हैं, इसका उल्लेख है। साहित्य की अपेक्षा जो मान्यूमेण्ट्स हैं उन पर ज्यादा भरोसा करना चाहिए, बिल्कुल सही बात है लेकिन मान्यूमेण्ट्स मनुष्य के बनाए होते हैं और बहुत बार प्रकृति के बनाये भी होते हैं। ये सरस्वती प्रकृति का बनाया मान्यूमेण्ट है। यह ऋग्वेद में जल से भरी हुई है और हड़प्पा सभ्यता के ह्रास काल में खाली है, इससे समय का अंतर समझा जा सकता है।

इसके बाद कैसेट में कुछ देर की वार्ता रिकार्ड नहीं हो सकी। लेकिन बाद की बातों से लगता है कि संवाद का विषय ऋग्वेद, आर्यों के आगमन और वैदिक संस्कृति से बदल कर जाति व्यवस्था पर केंद्रित हो गया – तद्भव।

कार्य के दबाव से नहीं होता तनाव

आप इस भ्रम में न रहें कि काम के बेहद दबाव के कारण आप तनावग्रस्त होते हैं। आपकी यह धारणा सही नहीं है। हाल ही में हुई एक रिसर्च के अनुसार यह गलत धारणा है कि व्यक्ति कार्य के अत्यधिक बोझ के कारण तनावग्रस्त होता है। यदि आप काम को बोझ समझते हैं, तो यह तय माने कि आप स्वयं को कहीं ज्यादा तनावग्रस्त महसूस करेंगें। एक आत्मविश्वासी व्यक्ति कभी भी आपने कार्य को लेकर तनावग्रस्त नहीं होता। इसके विपरीत जो शख्स अपने कार्य को गहराई से नहीं समझते और जिनमें आत्मविश्वास का अभाव होता है ऐसे ही शख्स अपने कार्यक्षेत्र में स्वयं को तनावग्रस्त महसूस करते हैं। इस तरह के व्यक्ति अपनी गलतियों को दूसरों पर थोपने के आदी होते हैं। वे आत्मनिरीक्षण को भी बोझ समझते हैं।

अपने कार्यक्षेत्र में या कार्य में आत्मविश्वासी बनने के लिए संबंधित कार्य की बारीकियों को सीखें। व्यक्तित्व विकास से सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़ें। ऐसे लोगों के बीच रहें जिनकी सोच सकारात्मक हो। निराशावादी या नकारात्मक सोच वाले व्यक्तियों के संपर्क में रहने से आप पर भी उनकी नकारात्मक विचार तरंगों का प्रभाव पड़ता है। यदि आप किसी कार्य को लेकर स्वयं को तनावग्रस्त महसूस करते हैं तो उस कार्य की कठिनाईयों को समझने का प्रयास करें। इससे आपकी कोशिशें रंग लाएंगी और आप कार्य के दबाव से छुटकारा पा जाएंगे।

पण्डित चमूपति जी की अूमल्य कृति
'संध्या-रहस्य' का धारावाह प्रकाशन

मन लगाने की विधि

मन को समाहित करने के लिए उसको ऐसा विषय दो जिसमें इसको दौड़-धूप का खुला स्थान हो। परमात्मा के प्रत्येक गुण में ऐसी विशालता की पराकाष्ठा है। अनन्त के किसी गुण का अन्त नहीं। यदि सान्त पदार्थ पर ध्यान जमाया, तो अनन्त की ओर जाने की अपेक्षा उससे विमुख होने का अधिक यत्न किया।

मन की चंचलता सम्यक् ध्यान में बाधक है। योगियों का सबसे बड़ा शत्रु मन कहा जाता है। किसी ने मन को मूर्ख कह कर, किसी ने शठ बताकर उसके सुधारने की आवश्यकता बताई है। इसमें सन्देह नहीं कि बिगड़ा हुआ मन मनुष्य को ठौर ठिकाना छुड़वा देता है। परन्तु सधा जाए तो ऐसा योग का उपयोगी साधन कोई नहीं।

वस्तुतः मन की चंचलता इतनी निन्द्य नहीं जितनी बताई जाती है। चंचल मन प्रतिभा का भंडार है। जितनी तीव्र मन की गति होगी, उतना अधिक तत्त्वों का ग्रहण अन्तःकरण में होगा। कई मनुष्य अनेक स्वरों तथा भाषाओं को एक साथ सुनकर उनको समझ ही नहीं जाते किन्तु उनके गुण-दोषों की परीक्षा भी कर सकते हैं। उनका मन क्षण-मात्र में कई विषयों में दौड़-धूप कर लेता है। एक विषय के कई अवयव होते हैं। जिनके मन की गति वेगवती है, वह बहुत शीघ्र एक अवयव से दूसरे और दूसरे से तीसरे का घेरा डाल लेते हैं। मन्द गति वाले घण्टों एक ही अवयव पर नष्ट कर देते हैं।

समाहित और स्तब्ध मन में भेद है। समाहित वह मन है जिसकी गति को रोका नहीं गया, किन्तु नियम में लाया गया है। स्तब्ध वह है जिसमें गति ही नहीं। ऐसा मूढ़ों का मन है कि जिन्हें कुछ आना नहीं।

इसमें कुछ लाभ नहीं कि मन केवल एक विषय पर ही घंटों अटका रहे। लाभ इसमें है कि उस विषय के प्रत्येक अवयव में उतनी गहरी डुबकी मारे जितनी उसके सम्यक् ज्ञान के लिए चाहिए। अर्थात् उसमें गति तो रहे परन्तु उस की वृत्ति गहराई की ओर हो। जब उस अवयव से निवृत्ति हो तत्काल ही दूसरे अवयव में चला जाए। इसी से उसकी चाल सूक्ष्म होती है, और सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय की ओर प्रवृत्ति होकर गूढ़ तत्त्वों की उपलब्धि का सामर्थ्य आता है।

मूर्तिपूजन में यही दोष है कि उसमें गहराई नहीं। पत्थर अथवा पीतल पर ठहराने से मन स्तब्ध ही होगा। उसे जड़ पदार्थ का ही विचार रहेगा क्योंकि उसकी वृत्ति स्थूल है। इससे तो मन चंचल रहे, अच्छा है।

साकारोपासना निराकारोपासना की भूमिका कही जाती है, कि जब मन स्थूल पर रुकने लगा, इसे शनैः शनैः सूक्ष्म ध्यान का अभ्यास करायेंगे। भला यह क्योंकर होगा? पत्थर के निरन्तर ध्यान से बुद्धि पाषाणवत् स्तब्ध हो जाती है। फिर वह इस योग्य ही नहीं रहती कि उसे सूक्ष्म विचारों में डाला जाए।

गणित ध्यान का विषय है। इसके लिए अध्यापक पहिले मूर्ति-पूजन का अभ्यास नहीं कराता कि पहिले बालक का चित्त एकाग्र हो ले, फिर १,२ सिखाएंगे। प्रथम ही गणित में डाल देता है। छात्रों की सुविधा के लिए कभी प्राकृतिक प्रयोगों से, कभी रेखाओं और चित्रों से सहायता लेता है। वस्तु और चित्र का अनुपात काल्पनिक होता है परन्तु आकार-साम्य वास्तविक है।

योगी निराकार के गुणों का चिन्तन साकार प्रकृति की सहायता से करता है। वह सृष्ट जगत् में सृष्टिकर्ता के गुणों को पाता और आनन्द में निमग्न होता है। इस एक ही विषय में मन की सारी चंचलता समाप्त हो जाए, फिर भी उसकी समाधि वैसी की वैसी बनी रहेगी। अघमर्षण मंत्रों में इसी विधि से परमात्मा का पता लगाया है। इसमें मूर्ति को सामने रखकर क्या विचारें? यही कि इसने सृष्टि नहीं की। यह संसार की नियन्त्री नहीं। यदि मूर्ति अपनी भी नियन्त्री होती, तो भी 'नेति' कहकर परमात्मा का ध्यान कर लेते।

परमात्मा प्रकृति से परमार्थतया पृथक् है। परन्तु नियन्ता-नियमित तथा व्यापक-व्याप्य भाव से इन दो में अटूट सम्बन्ध है। शक्ति का क्षेत्र न हो तो शक्ति कैसी? परमेश्वर का परम ऐश्वर्य प्रकृति के प्रभुत्व ही से है।

इस की सुगम और अचूक विधि यह है कि बलपूर्वक अपनी वृत्ति उन भावों पर रखो जो मन्त्रों के शब्द-जाल में गुँथी हुई हैं।

सर्व-शक्ति के ध्यान में बाहुबल, विद्या-बल, बुद्धि-बल, समाज-बल, आत्मिक बल, इत्यादि कई बलों का विचार सहसा मन में आएगा। अनेक पहलवानों, असंख्य नीतिज्ञों, अगण्य विद्वानों और समाज समूहों का चित्र आंखों के आगे फिरेगा। इन सबका प्रत्यक्ष स्वरूप आंखें न देख पाएंगी, परन्तु बुद्धि समझ लेगी। फिर जी में आएगा ''नेति'' इतना नहीं।

ऐसे ही परमात्मा के और गुणों पर मन को अत्यन्त वेग से काम लेना होगा। अचिन्त्य का एक-२ गुण अथाह है। वेद ने उसे ''सदावृधः'' कहा है। अर्थात् जितना उसे समझो उतना आगे बढ़ता जाता है।

साकार का पूजन ऐसे ध्यान में बाधक है। मूर्ति मन की गति को स्तब्ध करती है, और हमें आवश्यकता उसे नियमबद्ध करने की है।

समाधि में चित्त एक विषय का हो रहता है। दूसरे पदार्थों में नहीं जाता, यद्यपि उपस्थित विषय में उसका वेग दूर की खोज निकालता है सही। वेद में मन के लिए यह प्रार्थना नहीं की, कि निःसंकल्प हो, किन्तु उसका शिव-संकल्प होना मांगा है। एक विषय के निरन्तर ध्यान में उसके अवयवों के बहुत्व के होते भी उनका परस्पर सम्बन्ध बिगड़ने नहीं पाता। यही आनन्द का कारण है।

मन को समाहित करने के लिए उसको ऐसा विषय दो जिसमें इसको दौड़-धूप का खुला स्थान हो। परमात्मा के प्रत्येक गुण में ऐसी विशालता की पराकाष्ठा है। अनन्त के किसी गुण का अन्त नहीं। यदि सान्त पदार्थ पर ध्यान जमाया, तो अनन्त की ओर जाने की अपेक्षा उससे विमुख होने का अधिक यत्न किया।

सन्ध्या के मन्त्रों में कहीं सृष्टि के वैचित्र्य को देखकर, कहीं इन्द्रियों के लिये बल मांग कर, कहीं पवित्रता के प्रार्थी होकर, कहीं छहों दिशाओं का मानसिक चक्र लगाकर, कहीं कल्याण, कहीं अभय की याचना से परमात्मा के स्वरूप को पहचानना चाहा है।

मन्त्रों के अर्थ आने से पूर्व इस रहस्य से वंचित रहोगे। निरर्थक शंख जब तक बजे बजाओ। जब अर्थ आ गये, तब मन का समाहित होना न होना तुम्हारे यत्न पर निर्भर है। मुख मन्त्रों के उच्चारण से शुद्ध होगा। मन लोक लोकान्तरों की सुधि लेगा। इस चंचलता से घबराओ मत। इसके आगे धातु का लिंग खड़ा किया तो उसे और चंचल बना लोगे। यह मन्त्रों से विमुख होने का एक और साधन होगा। मंत्र मननवाची धातु से है। सन्ध्या में मन की एकाग्रता यह है कि मंत्रार्थ का ध्यान रहे; सो मूर्ति पर तो लिखा नहीं।

इस की सुगम और अचूक विधि यह है कि बलपूर्वक अपनी वृत्ति उन भावों पर रखो जो मन्त्रों के शब्द-जाल में गुँथी हुई हैं। जिस मन्त्र के अर्थ से मन भागे, उसका उच्चारण एक बार और करो। जब तक प्रत्येक मंत्र का अर्थ एक बार हृदय में से न गुजर जाए तब तक उस मन्त्र को न छोड़ो। कुछ काल के अभ्यास से सन्ध्या तुम्हारे स्वभाव का अंग बन जाएगी। और ज्योंही किसी मंत्र पर मन लगाओगे, उसका अर्थ स्फुरित होगा।

मांगने योग्य वस्तु।

मांगने की विधि वेद ने सिखाई है।

संसार की कोई कमनीय वस्तु नहीं जिसके लिये वेद में याचना न की हो। शरीर की पुष्टि, धन-धान्य, गौएं, घोड़े, पशु, अन्तःकरण की शुद्धि, पुत्र, प्रजा, शत्रुओं पर विजय, कृषि, व्यापार, ब्रह्मतेज, सबके लिए परम दयालु परमात्मा के आगे हाथ पसारे हैं।

हम ऊपर बता चुके हैं कि उपासकों की परिभाषा में प्रार्थना और प्रतिज्ञा पर्याय है। हाथ पसारे हैं तो हाथ हिलाने भी स्वयं होंगे।

वेद का वैचित्र्य यह है कि इस में जीवन के संपूर्ण अंगों पर एक साथ ही दृष्टि डाली है। जहां ब्रह्मतेज मांगा है, वहां भौतिक वैभव को भी हाथ से नहीं दिया। वेद में न अधूरे आदर्श हैं, न अधूरे प्रयत्नों पर बल दिया है। ब्राह्मण ग्रंथ की वह श्रुति जो हम हवन करते समय बार-२ दोहराते हैं, कितनी स्पष्ट है, जिस में प्रजा, पशु, ब्रह्मवर्चस्, अन्न जो आद्य हो-अर्थात् खाने योग्य, इन सब पदार्थों के लिए इकट्ठी प्रार्थना की है।

यहाँ समृद्धि का अर्थ रुपये पैसे नहीं किया, किन्तु

धन हेय वहां होता है, जहां धर्म्म को त्याग दिया जाय। पाप पुण्य दोनों का सहायक धन है। दोष हमारी वृत्ति तथा उपयोग का है। पाप के डर से धन को छोड़ना भीरूता है। दरिद्रता और अधिक पाप कराती है। वीरों की भांति जीवन को बलमय बनाओ।

उन वस्तुओं को एक-२ करके गिनाया है जो वास्तविक सम्पत्ति हैं। आधुनिक भारत पिछली कई शताब्दियों की अपेक्षा रुपया अधिक रखता है, पर फिर भी दुर्भिक्ष इतना है कि पहले कभी देखने सुनने में नहीं आया। अर्थशास्त्र रुपये को धन नहीं मानता, किन्तु इसकी क्रय-शक्ति को धन मानता है। इस रहस्य को हमारे पूर्वजों ने भली भाँति जाना था।

आधुनिक वैश्य जाति को अर्थशास्त्र की इस शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सिक्कों के पृथ्वी में दबा रखने से हम समृद्धिशाली न होंगे, उनके प्रयोग से अर्थात् उस सामग्री के हस्तगत करने और अपनी तथा जाति की देह में खपाने से ही आढ्य बनेंगे जो तुष्टि पुष्टि देने वाली है।

आर्य बालक गायत्री मन्त्र में बुद्धि बल की प्रार्थना करता है। यह मन्त्र इस जाति का मूल मन्त्र है। इस रहस्य को जितना हम ने पहचाना है, किसी ने नहीं पहचाना, कि बुद्धि मूल धन है।

शारीरिक बल के लिए सदैव इन्द्रिय स्पर्श किंया जाता है। एक-२ अंग को टटोल-२ कर उसकी पुष्टि की परख की जाती है। जाति-बल, बुद्धि-बल, समाज-बल, ब्राह्म-बल, सब के लिए बल-स्वरूप का किवाड़ खटखटाया जाता है।

दार्शनिक जब एक वस्तु की सिद्धि पर बल देता है, तो उसे दूसरी सब वस्तुओं का मानो विस्मरण सा हो जाता है। यह सचाई स्वामी दयानन्द ने दिखाई है कि विविध दर्शन एक दूसरे की पूर्ति करते हैं। जैसे आज कल का वैद्य शरीर का निदान तथा औषधियों के गुणों का ज्ञान रखता है और उसे नक्षत्र-विद्या का पता नहीं, तो भी वह नक्षत्रों के होने का निषेध नहीं करता, ऐसे ही सांख्य प्रकृति को मुख्य विषय मानता है और ईश्वर का विशेष वर्णन नहीं करता। एवं वेदान्त में ब्रह्मज्ञान का मुख्यरूपेण विवेचन किया है, और दूसरे पदार्थों पर गौण दृष्टि डाली है।

नवीन वेदान्त इस मुख्य और गौण के भेद को न जानकर केवल ब्रह्म के अस्तित्व पर अवलंबित हुआ। अकेले ब्रह्म की चाह करते-२ प्रकृति और जीव के महत्व को ही भुला बैठे। संसार को स्वप्न क्या कहा, अपने जीवन से जागृति की झलक ही मिटा दी।

ऐसे समय में रट चली कि संसार असार है। इसकी इच्छा करना मूर्खता है, परमात्मा से परमात्मा मांगो। परमात्मा से भिन्न जब कुछ था ही नहीं तो फिर उसे मांगते कैसे?

सच पूछो तो नवीन वेदान्त आलस्य का बहाना था। भारत को पुरुषार्थ-हीन इसी सिद्धान्त ने किया।

जो अनेकभाववादी हैं। वह इस प्रार्थना का कुछ और अर्थ लेते हैं। उनके मन में वांछनीय पदार्थों में उत्तम परमात्मा है। उस को पाकर किसी और पदार्थ की चाह नहीं रहती। ऐसे लोगों ने परमात्मा को सांसारिक पदार्थों की भांति अधिकार में आने वाली वस्तु माना है और प्रकृति और परमात्मा को परस्पर शत्रु समझकर एक की प्रीति में दूसरे का त्याग आवश्यक जाना है।

वस्तुतः यह भूल है। परमात्मा प्रकृति से परमार्थतया पृथक् है। परन्तु नियन्ता-नियमित तथा व्यापक-व्याप्य भाव से इन दो में अटूट सम्बन्ध है। शक्ति का क्षेत्र न हो तो शक्ति कैसी? परमेश्वर का परम ऐश्वर्य प्रकृति के प्रभुत्व ही से है।

परमात्मा प्रकृति के बिना मिलें कैसे? वेद परमात्मा को राजा कहता है। चक्रवर्ती राज्य मांगना परमात्मा के एक बड़े गुण की याचना करना है। वैभव की सिद्धि के लिए प्रयत्न करना विभु की वास्तविक प्राप्ति का साधन करना है।

परमात्मा ज्ञानी हैं, इसलिए ज्ञान चाहो। परमात्मा बली हैं, इसलिए बल चाहो। परमात्मा अधिपतियों के अधिपति हैं। तुम्हारी उपासना यह है कि तुम भी अपने सामर्थ्यानुसार ही अधिपत्य मांगो और प्राप्त करो। परमात्मा का व्यापार तथा कला-कौशल समस्त संसार की कलाओं से प्रमाणित है। उसी की कृषि से सम्पूर्ण कृषि है। बिना किंकरों के वह किंकरो की भी सेवा करता है। परमात्मा कर्म्म करते हैं। तुम कर्म्म करो, तब परमात्मा के प्रिय होगे।

सांसारिक बड़ाई हेय नहीं, उपादेय है। जितने बड़े होगे उतने परमात्मा के निकट पहुंचोगे।

प्रवृत्ति में निवृत्ति की झलक झलकानी चाहिए। प्राकृतिक पदार्थों पर प्रभुत्व पाकर उनके दास न बन जाओ। धन उत्तम वस्तु है यदि हम उसके स्वामी हों। वह धार्म्मिक नहीं जो धनी नहीं। जो आवश्यकता भर कमा नहीं सकता, उसको जीवन का अधिकार नहीं। अपने पेट से बचता है, दूसरों का पेट भरो। रुपया कमाने में बस न करो।

धन हेय वहां होता है, जहां धर्म्म को त्याग दिया जाय। पाप पुण्य दोनों का सहायक धन है। दोष हमारी वृत्ति तथा उपयोग का है। पाप के डर से धन को छोड़ना भीरूता है। दरिद्रता और अधिक पाप कराती है। वीरों की भाँति जीवन को बलमय बनाओ।

आज के भारत को धन से विमुख करना उसे मृत्यु का ग्रास बनाना है। भूख को भ्रांति कहने से भूखे की तृप्ति नहीं होगी। परमात्मा से परमात्मा मंगवाना है तो पहेलियों में न मंगवाओ। स्पष्ट कहो, धन पाना परमात्मा पाना है। बल पाना परमात्मा पाना है। धर्म्म पाना परमात्मा पाना है। इन पदार्थों का कुप्रयोग घर आए परमात्मा का अनादर करना है।

१४ फरवरी को

'वैलेण्टाईन डे' को पारिवारिक एकता दिवस के रूप में मनाएँ

❐ डॉ० जगदीश गांधी, संस्थापक-प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

इस समस्या के समाधान का एक मात्र उपाय है, बच्चों को बचपन से ही भौतिक, सामाजिक, मानवीय तथा आध्यात्मिक सभी प्रकार की संतुलित शिक्षा देकर उनका सर्वांगीण विकास किया जाए।

'वैलेन्टाइन दिवस' के वास्तविक, पवित्र एवं शुद्ध भावना को समझने की आवश्यकता:-

'परिवार बसाने' एवं 'पारिवारिक एकता' का संदेश देने वाले महान संत वैलेन्टाइन के 'मृत्यु दिवस' का आज जिस 'आधुनिक स्वरूप' में भारतीय समाज में स्वागत किया जा रहा है, उससे हमारी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता प्रभावित हो रही है। संत वैलेन्टाइन ने तो युवा सैनिकों को विवाह करके परिवार बसाने एवं पारिवारिक एकता की प्रेरणा दी थी। इस कारण अविवाहित युवा पीढ़ी का अपने प्रेम का इजहार करने का 'वैलेन्टाइन डे' से कोई लेना-देना ही नहीं है। आज वैलेन्टाइन डे के नाम पर समाज पर बढ़ती हुई अनैतिकता ने हमारे समक्ष काफी असमंजस तथा सामाजिक पतन की स्थिति पैदा कर रखी है। नैतिक मूल्यों की कमी के कारण आज लड़कियों तथा महिलाओं के विरुद्ध अपराध, छेड़छाड़, अश्लीलता, बलात्कार, हत्या आदि जैसी जघन्य घटनायें लगातार बढ़ती ही जा रहीं हैं।

विवाह के पवित्र बन्धन को 'वैलेन्टाइन दिवस' पूरी तरह से स्वीकारता एवं मान्यता देता है :-

'वैलेन्टाइन डे' का दिन हमें सन्देश देता है कि अविवाहित स्त्री-पुरुष के बीच किसी प्रकार का अनैतिक संबंध नहीं होना चाहिए। विवाह के पवित्र बन्धन को 'वैलेन्टाइन डे' पूरी तरह से स्वीकारता एवं मान्यता देता है। आज महान संत वैलेन्टाइन की मूल, पवित्र एवं शुद्ध भावना को भुला दिए जाने के कारण यह महान दिवस मात्र युवक-युवतियों के बीच रोमांस के विकृत स्वरूप में देखने को मिल रहा है। वैलेन्टाइन डे को मनाने के पीछे की जो कहानी प्रचलित है उसके अनुसार रोमन शासक क्लाडियस (द्वितीय) किसी भी तरह अपने राज्य का विस्तार करना चाहता था। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए वह संसार की सबसे ताकतवर सेना को बनाने के लिए जी-जान से जुटा था। राजा के मन में स्वार्थपूर्ण विचार आया कि विवाहित व्यक्ति अच्छे सैनिक नहीं बन सकते हैं। इस स्वार्थपूर्ण विचार के आधार पर राजा ने तुरन्त राजाज्ञा जारी करके अपने राज्य के सैनिकों के शादी करने पर पाबंदी लगा दी।

प्रेम तो ईश्वर से होना चाहिए क्योंकि यही जीवन का शाश्वत सत्य है। अगर ईश्वर से हमारा तार कट गया तो कोई अन्य प्रेम हमें नहीं बचा पाएगा।

महान संत वैलेन्टाइन के प्रति सच्ची श्रद्धा प्रकट करने के लिए मनाया जाता था 'वैलेन्टाइन दिवस' :-

रोम के एक चर्च के पादरी महान संत वैलेन्टाइन को सैनिकों के शादी करने पर पाबंदी लगाने संबंधी राजा का यह कानून ईश्वरीय इच्छा के विरुद्ध प्रतीत हुआ। कुछ समय बाद उन्होंने महसूस किया कि युवा सैनिक विवाह के अभाव में अपनी शारीरिक इच्छा की पूर्ति गलत ढंग से कर रहे हैं। सैनिकों को गलत रास्ते पर जाने से रोकने के लिए पादरी वैलेन्टाइन ने रात्रि में चर्च खोलकर सैनिकों को विवाह करने के लिए प्रेरित किया। सम्राट को जब यह पता चला तो उसने पादरी वैलेन्टाइन को गिरफ्तार कर माफी मांगने के लिए कहा अन्यथा राजाज्ञा का उल्लघंन करने के लिए मृत्यु दण्ड देने की धमकी दी। सम्राट की धमकी के आगे संत वैलेन्टाइन नहीं झुके और उन्होंने प्रभु निर्मित समाज को बचाने के लिए मृत्यु दण्ड को स्वीकार कर लिया। संत वैलेन्टाइन की मृत्यु के बाद लोगों ने उनके त्याग एवं बलिदान को महसूस करते हुए प्रतिवर्ष १४ फरवरी को उनके 'शहीद दिवस' पर प्रार्थनायें आयोजित करना प्रारम्भ कर दिया। इसलिए ऐसे महान संत के 'शहीद दिवस' पर इस प्रकार खुशियां मनाकर उनकी भावनाओं का निरादर करना सही नहीं है।

वैलेन्टाइन डे को 'आधुनिक' तरीके से मनाना भावी पीढ़ी के प्रति अपराध :-

'वैलेन्टाइन डे' मनाने को तेजी से प्रोत्साहित करने के पीछे छिपी एकमात्र भावना धन कमाना है, अर्थात्

'वैलेन्टाइन डे' कार्डों की ब्रिकी का एक बड़ा बाजार विकसित करना, फूहड़ डान्सों तथा मंहगे होटलों में डिनर के आयोजनों की प्रवृत्तियों को बढ़ाकर अनैतिक ढंग से अधिक से अधिक लाभ कमाने वाली शक्तियां इसके पीछे सक्रिय हैं। विज्ञापन के आज के युग में वैलेन्टाइन बाजार को भुनाने का अच्छा साधन माना जाता है। मल्टीनेशनल कंपनियां अपने उत्पादों को बेचने के लिए अपना बाजार बढ़ाना चाहती हैं और इसके लिए उन्हें युवाओं से बेहतर ग्राहक कहीं नहीं मिल सकता। अतः 'वैलेन्टाइन डे' आधुनिक तरीकों से मनाने को प्रोत्साहित करना भावी पीढ़ी एवं मानवता के प्रति अपराध है। अन्तिम विश्लेषण यह साफ संकेत देते हैं कि 'वैलेन्टाइन डे' के आधुनिक स्वरूप का भारतीय समाज एवं छात्रों में किसी प्रकार का स्वागत नहीं होना चाहिए क्योंकि यह मात्र सस्ती प्रेम भावनाओं को प्रदर्शित करने की छूट कम उम्र में छात्रों को देकर उनकी अनैतिक वृत्ति को बढ़ावा देता है।

परिवार, स्कूल एवं समाज को ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित करें :-

हम संत वैलेन्टाइन के इन विचारों का पूरी तरह से समर्थन करते हैं कि विवाह के बिना किसी स्त्री-पुरुष में अनैतिक संबंध होने से समाज में नैतिक मूल्यों में गिरावट आ जाएगी और समाज ही भ्रष्ट हो जाएगा। इस समस्या के समाधान का एक मात्र उपाय है, बच्चों को बचपन से ही भौतिक, सामाजिक, मानवीय तथा आध्यात्मिक सभी प्रकार की संतुलित शिक्षा देकर उनका सर्वांगीण विकास किया जाए। किसी भी बच्चे के लिए उसका परिवार, स्कूल तथा समाज ये तीन ऐसी पाठशालायें हैं जिनसे बालक अपने सम्पूर्ण जीवन को जीने की कला सीखता है। इसलिए यह जरूरी है कि परिवार, स्कूल तथा समाज को ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित किया जाये। एक स्वच्छ व स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए हमारा कर्तव्य है कि हम विश्व के बच्चों की सुरक्षा व शांति के लिए आवाज उठायें और पूरे विश्व के बच्चों तक संत वैलेन्टाइन के सही विचारों को पहुँचायें जिससे प्रत्येक बालक के हृदय में ईश्वर के प्रति, अपने माता-पिता के प्रति, भाई-बहनों के प्रति और समाज के प्रति भी पवित्र प्रेम की भावना बनी रहे।

परिवार, विद्यालय तथा समाज से मिली शिक्षा ही मनुष्य के चरित्र का निर्माण करती है:-

दिल्ली गैंगरेप कांड जैसी बढ़ती घटनायें चारित्रिकता, नैतिकता, कानून व जीवन मूल्यों की शिक्षा के अभाव में राह भटक गये लोगों के कारण ही हो रहीं हैं। वास्तव में किसी भी मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को तीन प्रकार के चरित्र निर्धारित करते हैं। पहला प्रभु प्रदत्त चरित्र, दूसरा माता-पिता के माध्यम से प्राप्त वांशिक चरित्र तथा तीसरा परिवार, स्कूल तथा समाज से मिले वातावरण से विकसित या अर्जित चरित्र। इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण चरित्र तीसरा अर्थात् 'अर्जित चरित्र' होता है। बालक को जिस प्रकार की शिक्षा परिवार, विद्यालय तथा समाज से मिलती है वैसा ही उसका चरित्र निर्मित हो जाता है। इसलिए आज संसार में बढ़ते अमानवीय कृत्य जैसे हत्या, बलात्कार, चोरी, भ्रष्टाचार, अन्याय आदि शैतानी सभ्यता इन्ही तीनों क्लासरूमों से मिल रही उद्देश्यविहीन शिक्षा के कारण ही है।

'वैलेन्टाइन डे' को 'पारिवारिक एकता दिवस' के रूप में मनाएँ :-

आइये, वैलेन्टाइन डे पर हम सभी लोग यह प्रतिज्ञा लें कि हम अपने मस्तिष्क से भेदभाव हटाकर सारी मानवजाति से प्रेम करेंगे व समानता की भावना पैदा करेंगे। भारत की संस्कृति व सभ्यता ही आज की जरूरत है। प्रेम तो ईश्वर से होना चाहिए क्योंकि यही जीवन का शाश्वत सत्य है। अगर ईश्वर से हमारा तार कट गया तो कोई अन्य प्रेम हमें नहीं बचा पाएगा। इसलिए हमें वैलेन्टाइन डे पर भाई-बहन का प्रेम, दादा-दादी का प्रेम, माता-पिता का प्रेम, गुरुजनों का प्रेम भी शामिल करना चाहिए तभी हम इस त्योहार का सही मूल्यांकन कर सकेंगे। संत वैलेन्टाइन के प्रति सच्ची श्रद्धा यही होगी कि हम १४ फरवरी 'वैलेन्टाइन डे' को पवित्र भावना से 'पारिवारिक एकता दिवस' के रूप में मनायें और संसार के सभी बच्चों, शिक्षकों एवं अभिभावकों को यह संदेश भेजें कि सभी लोग एक-दूसरे से समान रूप से प्रेम करें, आदर करें, तभी एक आध्यात्मिक विश्व की स्थापना हो सकेगी।

वेद के सम्बंध में

इनका दृष्टिकोण

❖ वेद अनादि हैं और उनकी सत्यता सिद्ध करने के लिए किसी मानवीय प्रमाण की आवश्यकता नहीं है और यह भी सृष्टि के उत्पत्तिकर्त्ता परमेश्वर से ही आविर्भूत हुए हैं। -शोपेन हॉअर, जर्मन विद्वान

❖ वह परमात्मा सर्वशक्तिमान, अनादि, अनन्त, अगम्य, स्वयंभू, सर्वद्रष्टा और अदृश्य है। वह अज्ञेय, सत्य स्वरूप और संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने वाला है। ऐसे और अन्य इसी प्रकार अनेक गुणों से सम्पन्न सर्वशक्तिमान् के रूप में वेदों में इस देव का वर्णन किया गया है। -चार्ल्स

दही में छिपे हैं स्वास्थ्य के रहस्य

□डॉ॰ विनोद गुप्ता

सर्वत्र सुलभ दही अनेक पोषक तत्त्वों से भरपूर है और अनेक शारीरिक विकारों को दूर करने में सहायक है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से दही एक उत्तम आहार है। यह रुचिकर और स्वादिष्ट होने के साथ-साथ औषधीय गुणों से परिपूर्ण भी होता है। यही कारण है कि आयुर्वेद में इसकी काफी महत्ता बताई गई है। इसका नियमित सेवन कई गंभीर रोगों को भी नष्ट कर देता है या उनमें कमी करता है।

दही में सभी आवश्यक पोषक तत्व होते हैं। यह प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट, वसा, खनिज, लवण तथा विटामिनों से भरपूर होता है। दही विटामिन ए तथा बी का एक अच्छा स्रोत है। इसमें कैल्शियम और फास्फोरस भी पर्याप्त मात्रा में होता है। दही में जो जीवाणु पाए जाते हैं वे मित्र जीवाणु होते हैं। दही मे दो किस्म के जीवाणु होते हैं, एक तो लेक्टोवेसिलस बुल्गारिस और दूसरे स्टेपटीकेकस थेमेफिलस। ये हमारी आंतों को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करते हैं।

पेट या उदर संबंधी रोगों के लिए दही किसी रामबाण औषधी से कम नहीं है। इसके सेवन से आंतों की दीवारें स्वस्थ और सशक्त होती हैं। यह पाचन शक्ति को सुधारता है तथा उसे मजबूत करता है। संग्रहणी रोग में यह बहुत लाभदायक है।

दही चर्मरोगों से भी निजात दिलाता है। दाद से निजात पाने के लिए दही में नौसादर मिलाकर लगाएं। यदि फोड़े फुंसियों हो गए हों तो दही का लेप करें।

बवासीर से परेशान हों तो दही में अजवाईन तथा सेंधा नमक मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

पौरुष शक्ति बढ़ाने में भी दही असरकारक है। इसके सेवन से न केवल वीर्य पुष्ट व गाढ़ा होता है, अपितु स्तंभन शक्ति भी बढ़ती है। स्वप्नदोष की शिकायत भी दूर हो जाती है।

बालों को स्वस्थ बनाए रखने में दही की महत्वपूर्ण भूमिका है। दही में बेसन मिलाकर बालों में लगाने से रूसी दूर होती है। यदि दही में काली मिर्च चूर्ण मिलाकर बालों में लगाएं तो वे काले, घने व मुलायम हो जाते हैं।

यदि बालों में दही का लेप लगाने के बाद गुनगुने पानी में नींबू निचोड़कर बाल धोए जाएं तो उनमें प्राकृतिक चमक आ जाती है।

दही का सेवन स्तनों के लिए भी लाभदायक है। यदि दही में जैतून का तेल मिलाकर नीचे से ऊपर की तरफ स्तनों की मालिश की जाए तो वे पुष्ट होते हैं। यही नहीं, इसका नियमित सेवन स्तन कैंसर से भी बचाता है क्योंकि इसमें निहित तत्व कैंसर कोशिकाओं को फैलने से रोकते हैं।

कैल्शियम होने की वजह से हड्डियों और दांतों की सेहत के लिए भी यह फायदेमंद है।

दही का सेवन ह्रदय रोगों से भी बचाता है। पहली बात तो यह है कि इसके सेवन से चर्बी या मोटापा घटता है, जो ह्रदय रोग का मुख्य कारण है। रक्तचाप को भी यह नियंत्रित करता है। यदि दही में शहद मिलाकर सेवन किया जाए तो ह्रदय मजबूत होता है। इसमें कोलेस्ट्रोल को कम करने की शक्ति है जो ह्रदय रोगियों के लिए वरदान है।

नकसीर की शिकायत होने पर दही में थोड़ा सा कपूर मिलाकर माथे पर लगाने से लाभ होता है।

महिलाएं श्वेतप्रदर रोग से पीड़ित हैं तो दही में अनार के ताजा पत्तों का रस, काली मिर्च चूर्ण तथा थोड़ा सा पानी मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

मुंह के छाले कितने कष्टप्रद होते हैं, यह एक भुक्तभोगी ही जान सकता है लेकिन दही में शहद मिलाकर लगाने से बहुत राहत मिलती है।

मूत्राशय की पथरी के लिए भी दही का सेवन अत्यंत गुणकारी है।

शरीर पर व्याप्त अनावश्यक दाग धब्बे दूर करने के लिए दही में हल्दी पाउडर और नींबू का रस मिलाकर लगाने से लाभ होता है।

दही में बेसन मिलाकर मालिश करने से पसीने की बदबू दूर होती है।

दही एक उत्तम उबटन का कार्य करता है। इसमें आटा व बेसन मिलाकर उबटन तैयार कर लें तथा शरीर पर मलें। इससे त्वचा में नया निखार आ जाता है। यदि अतिसार से पीड़ित हों तो दही में ईसबगोल की भूसी मिलाकर सेवन करना चाहिए।

दस्त होने पर दही एक रामबाण औषधि है। दही के साथ केला खाने से असर तुरंत होता है।

जानिये यंत्रों के नाम

प्रतीक सोनी

❍ एनिमोमीटर- वायु की शक्ति और गति मापने का यंत्र
❍ कार्डियोग्राम- मनुष्य की हृदय गति को मापने का यंत्र
❍ लैक्टोमीटर- दूध की शुद्धता मापने का यंत्र
❍ फेदोमीटर- समुद्र की गहराई मापने का यंत्र
❍ माइक्रोमीटर- मिलीमीटर के हजारवें भाग को ज्ञात करने वाला उपकरण
❍ पोलीग्राफ- झूठ का पता लगाने वाला यंत्र
❍ स्टेथेस्कोप- हृदय व फेफड़ों की आवाज सुनने का यंत्र
❍ टैको मीटर- वायुयान की गति मापने वाला यंत्र
❍ यूडोमीटर- वर्षा मापने वाला यंत्र

हास्यम्

-आस्था गुड्डू

◆ एक आदमी चश्मे की दुकान में जाकर बोला-'मेरी नजर कमजोर है, आंखें टेस्ट करवाकर ऐनक बनवानी है।'
दुकानदार ने कहा-'आपकी नजर वास्तव में बहुत कमजोर हो गई है।'
'आपको कैसे पता चला' उस व्यक्ति ने पूछा।
'क्योंकि आप दरवाजे की बजाय खिड़की के रास्ते अन्दर आए हैं।' दुकानदार ने कहा।

◆ बाराती दुल्हे को घोड़े पर रस्सी के साथ बांधकर ले जा रहे थे। लोगों ने इसका कारण पूछा तो एक बाराती ने बताया- 'यह दुल्हा असल में भिखारी है। जब भी कोई पैसे फैंकता है तो यह घोड़ी से उतरकर उन्हें बटोरने लगता है। इसलिए बांध रखा है।'

◆ हाथी- मैं दुनिया का सबसे बलवान प्राणी हूँ।
चींटी- इतने बलवान हो तो मेरे बिल में घुसकर दिखाओ।
हाथी ने चूहे को मुंह बनाकर देखा और कहा-'मैंने अपने जीवन में इतना कमजोर और छोटा जीव नहीं देखा।'
चूहे ने शरमाते हुए कहा- 'हाथी भाई, मैं शुरु से ही ऐसा नहीं हूँ। असल में मैं पिछले दो महीने से डायटिंग पर हूँ।'

◆ हरसी- एक हाथी के सामने खाने के लिए १० सेब रख दिये। बताओ कितने बचे?
अनु- एक भी नहीं।
हरसी- गलत, एक सेब बच गया।
अनु- कैसे?
हरसी- क्योंकि एक सेब प्लास्टिक का था।
अनु- अच्छा, तुम बताओ, एक हाथी के सामने खाने के लिए १५ असली केले रखे गए। बताओ कितने बचे?
हरसी- एक भी नहीं।
अनु- गलत, काकू सारे बचे।
हरसी- कैसे?
अनु- क्योंकि इस बार हाथी प्लास्टिक का था।

बाल वाटिका

सम्पादक : सुमेधा

प्रहेलिका:

❖ तीन पंख हैं मेरे
पर परिन्दा नहीं हूँ।
जैसे चाहो चलाओ मुझे,
मगर जिंदा नहीं हूँ।

❖ बिना पंख के उड़ चला,
आसमान को जाता।
उड़ते उड़ते थकता नहीं,
प्राण चला ही जांता।।

❖ चार पांव, पर चल ना पाऊँ,
बिना हिलाए हिल ना पाऊँ,
फिर भी सबको दूँ आराम।
बोलो क्या है मेरा नाम?

❖ तीन प्लेट, बीच में स्लेट,
गरमी में काम आए,
बताओ तो जानें!!

पंखा, धुआं, चारपाई, पंखा

विचार कणिका:

-प्रतिभा बहन

❖ अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए ऐसा काम करना चाहिए जिससे हमारा अन्त:करण पवित्र हो जाए।
❖ जो अपनी गलती को जान लेता है और आगे न करने का निश्चय कर लेता है, वह जिन्दगी में बहुत ऊँचा उठ जाता है।
❖ डरपोक अपने जीवन में ही कई बार मरते हैं, वीर पुरुष केवल एक बार ही मरता है।
❖ दूसरों के कुवचनों पर गंभीरता से चिन्तन न करें। कहने वाला कहकर चला गया, उसके प्रभाव को भी साथ ही जाने दें।
❖ दमनकारी व्यक्ति स्वयं भी अपने आप से अति परेशान रहता है।
❖ जीवन में सच्ची आस्तिकता अपनाने के बाद हमें यह समझ आ जाएगा कि हम सब समान हैं और हम किसी से भेदभाव नहीं करेंगे।
❖ यदि आपको उन्नति करनी है तो स्वार्थ को छोड़ना होगा।

प्रेरक कथा

मेहनत की कमाई

❑सत्यसुधा शास्त्री

एक था धनवान। पूर्वजों का कमाया हुआ बहुत धन था उसके पास। उसने भी कमाया था और अपने जीवन में धन के महत्त्व को समझा भी था उसने। पर उसका बेटा था पक्का कामचोर। खर्च करने में सबसे आगे। मेहनत को तो जानता ही न था। पिता को बड़ी चिन्ता रहती थी कि यह तो सब नष्ट कर देगा। वह उसको मेहनत की कमाई का मूल्य बताना चाहता था। एक दिन उसने तंग आकर कहा– 'कुछ अपनी मेहनत से कमाकर लाओ, नहीं तो तुम्हें आज खाना नहीं मिलेगा।'

लड़के के लिए तो यह नई बात थी। उसने कभी कमाना तो सीखा ही न था। घबरा गया। मां के पास पहुंचा और रोने लगा। मां भी बाप के बारे में जानती थी कि कुछ सोचकर ही कहा होगा। पर उसे बेटे पर दया आ गई। अपने बटुए में से निकालकर उसको एक रुपया दे दिया। लड़का खुश हो कर पहुंचा पिता के पास। बोला–लीजिये मेहनत की कमाई। पिता ने कहा– ठीक है, जाओ इसे कुंए में डाल आओ। लड़के ने जाकर रुपये को कुंए में पटक दिया। पिता समझ गया कि इसे मेहनत का मूल्य नहीं पता।

अगले दिन फिर वही बात। पिता ने कहा– कमाकर लाओ। लड़के को फिर मुसीबत! आज मां भी नहीं देगी। आज बहन के पास जाकर रोया। बहन ने दया कर एक रुपया दे दिया। पिता को दिया तो वही रट– जाओ कुंए में फैंक आओ। लड़के को बात समझ नहीं आई। फिर भी उसने रुपये को कुंए में फैंक ही दिया। पिता को संतुष्टि नहीं हुई।

अगले दिन फिर पिता ने कमाकर लाने को कहा। अब उसके पास कोई चारा नहीं था। वह काम की तलाश में निकला। बड़ी मुश्किल से उसे काम मिला। पसीना आ गया कमाने में। सारा शरीर टूटने लगा। शाम को एक रुपया मिला। जाकर पिता के हाथ में थमा दिया। पिता ने उसकी हालत देख ली। पर कहा पहले की तरह वही– जाओ इसे कुए में फैंक आओ।

अबकी बार लड़के से रहा नहीं गया। उसकी रुलाई फूट पड़ी। 'आपको पता है मैंने यह रुपया कितनी मुश्किल से कमाया है। आपको तो जैसे कुछ हुआ ही नहीं। --जाओ कुंए में फैंक आओ! मै अपने खून-पसीने की कमाई को कुंए में कैसे फैंक दूँ?'

पिता ने उसे गले से लगा लिया। 'मत फैंको बेटा! मुझे खुशी है कि तुम मेहनत की कमाई का महत्त्व जान गए हो। मेरा सब धन तुम्हारा ही है। जिसे मैंने और हमारे पूर्वजों ने मेहनत से कमाया है। मां-बाप की कमाई को बिना सोचे समझे बरबाद करना कुंए में फैंकने के बराबर ही है। मुझे आशा है कि तुम अब पैसे का दुरुपयोग नहीं करोगे।'

बेटे की आंखों से खुशी के आंसू छलक आए। पिता ने उसी दिन से उसे सारा व्यवसाय सौंप दिया।

कैसे?

कौन बनेगा अपना जब, किसी को हमने अपनाया ही नहीं।
कैसे होगा दूर मन का अंधेरा, जब मन की दीपक जलाया ही नहीं।

क्यों करेगा कोई हमारी सहायता, जब उसमें हमने विश्वास दिखाया ही नहीं।
क्यों करेंगे बेटे हमारी सेवा, जब मां बाप को हमने पास बिठाया ही नहीं।

कैसे समझाएँ हम औरों को जब, अपने को कभी हमने समझाया ही नहीं।।
कैसे होगी घर में बरकत जब भूखे को हमने पेट भर खिलाया ही नहीं।।

कैसे आएगी घर में तरक्की, आज तक जब हमने हाथ हिलाया ही नहीं।
कैसे होगी भक्ति में शक्ति, जब ईश्वर से मन का तार मिलाया ही नहीं।।

प्रो० शाम लाल कौशल

मां के कर्ज का हिसाब

एक बेटा पढ़-लिख कर बहुत बड़ा आदमी बन गया। उसके पिता का स्वर्गवास बचपन में ही हो गया था। माँ ने ही उसे माता-पिता दोनों का प्यार देकर पाला पोसा, बड़ा किया और शिक्षित करके उसे हर तरह से योग्य बना दिया। एक अच्छा परिवार देखकर उसका विवाह कर दिया। विवाह के बाद पत्नी को माँ से शिकायत रहने लगी कि वह उनके स्टेटस में फिट नहीं है। लोगों को बताने मे उन्हें संकोच होता कि यह अनपढ़ उनकी माँ-सास है।

बात बढ़ने पर बेटे ने एक दिन माँ से कहा- 'माँ मैं अब इस काबिल हो गया हूँ कि कोई भी कर्ज अदा कर सकता हूँ। मैं और तुम दोनों सुखी रहें इसलिए आज तुम मुझ पर किये गए अब तक के सारे खर्च सूद और मूलधन के साथ मिला कर बता दो। मैं वह अदा कर दूंगा। फिर हम अलग-अलग सुखी रहेंगे।

माँ ने सोच कर उत्तर दिया-

'बेटा, हिसाब जरा लम्बा है, सोच कर बताना पडेगा। मुझे थोड़ा वक्त चाहिए।'

बेटे ना कहा- 'माँ, कोई जल्दी नहीं है। दो-चार दिनों में बता देना।

रात हुई, सब सो गए । माँ ने एक लोटे में पानी लिया और बेटे के कमरे मे आई। बेटा जहाँ सो रहा था उसके एक ओर पानी डाल दिया। बेटे ने करवट ले ली। माँ ने दूसरी ओर भी पानी डाल दिया। बेटे ने जिस ओर भी करवट ली माँ उसी ओर पानी डालती रही। तब परेशान होकर बेटा उठ कर खीज कर बोला कि माँ ये क्या है? मेरे पूरे बिस्तर को पानी-पानी क्यों कर डाला?

माँ बोली- 'बेटा, तुमने मुझसे पूरी जिन्दगी का हिसाब बनाने को कहा था। मैं अभी यह हिसाब लगा रही थी कि मैंने कितनी रातें तेरे बचपन मे तेरे बिस्तर गीला कर देने से जागते हुए काटी हैं। यह तो पहली रात है ओर तुझे अभी से क्रोध आ गया? मैंने अभी हिसाब तो शुरू भी नहीं किया है, जिसे तू चुकता कर पाए।'

बोध-कथाएँ
संकलन : सुमेधा

माँ शीतल छाया है पिता बरगद है जिसके नीचे बेटा उन्मुक्त भाव से जीवन बिताता है।

माँ की इस बात ने बेटे के हृदय को झकझोर कर रख दिया। फिर वह रात उसने सोचने मे ही गुजार दी। उसे यह अहसास हो गया था कि माँ का कर्ज आजीवन नहीं उतारा जा सकता। माँ शीतल छाया है पिता बरगद है जिसके नीचे बेटा उन्मुक्त भाव से जीवन बिताता है। माता अगर अपनी संतान के लिए हर दुःख उठाने को तैयार रहती है तो पिता सारा जीवन अपनी संतान की रक्षा करता है।

माता-पिता का कर्ज कभी अदा नहीं किया जा सकता।

-अनुराग दुबे 'अनुज'

एक रात की नींद

एक बालक अपनी मां का पक्का भक्त था। मां की सेवा के लिए वह हर कष्ट हंसते-हंसते सह लेता था। एक बार उसकी मां बीमार हो गई। वह जी-जान से उसकी सेवा में जुट गया। एक रात को मां की आँख खुली। उसने कहा- बेटा पानी ला दो, प्यास लगी है। वह बच्चा जल्दी से पानी लेकर आया। तब तक मां की आँख लग गई थी। वह मां के जागने की प्रतीक्षा में सारी रात मां के सिरहाने खड़ा रहा। पूरी रात गुजर गई। मां की आंख नहीं खुली।

सुबह मां जागी तो उसने बेटे को पानी लिए सिरहाने खड़ा पाया। उसे सारी बात याद आ गई। उसे बड़ा दुःख हुआ। 'बेटा तू सारी रात से खड़ा रहा?' 'हां, मां, रात में कभी तेरी आंख खुल जाती तो तुम स्नेह के कारण मुझे दुबारा नहीं जगाती, तब तुम प्यासी ही रह जाती।'

'पर बेटा, तू सारी रात जागता रहा। मुझे बड़ा दुःख हो रहा है।' मां ने करुणा भरे स्वर में कहा।

'इसका दुःख मत मनाओ मां' बेटे ने नम्रता से कहा- 'तुम मेरे लिए सैंकड़ों बार पूरी-पूरी रात जागी हो, मैं भी तुम्हारे लिए एक बार जाग गया तो क्या बात हुई?'

-प्रतिष्ठा

कैसे शिक्षा पुरानी भुलाई गई।।टेक।।

गर्भ से अन्त्येष्टि तक संस्कार करते थे।
पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य से प्यार करते थे।
गुरुकुल में पढ़ते थे इकरार करते थे।
गृहस्थी वेद विद्यालयों का उद्धार करते थे।
जो भी जिस प्रकार गृहस्थी धन कमाते थे।
नियम से दशमांश गुरुकुल में पहुंचाते थे।
इसलिये नि:शुल्क गुरुकुल में पढ़ाते थे।
ब्रह्मचारिणी ब्रह्मचारी जीवन बनाते थे।
आज विषयों में जिन्दगी गंवाई गई।।१।।

गृहस्थी हवन सन्ध्या सदा पुण्य दान करते थे।
वेद के विद्वान का सन्मान करते थे।
सत्यासत्य की बुद्धि से पहिचान करते थे।
प्रात: सायं नित्य प्रभु का ध्यान करते थे।
गृहस्थ बना व्यभिचार का भण्डार आजकल।
विषय चक्की में पिस रहे नर नार आज कल।
हर प्रकार के फैशन हैं शृंगार आज कल।
युवक युवती हैं विषयों के बीमार आजकल।
ब्रह्मचर्य की शक्ति लुटाई गई।।२।।

वानप्रस्थी वन में जा निवास करते थे।
अपाम समीपे योग का अभ्यास करते थे।
ईश्वर को मन मन्दिर में तल्लाश करते थे।
वेद मंत्रों का अर्थ प्रकाश करते थे।
साधु पीवें सुल्फा चरस भांग आज कल।
गोली गण्डे दे और खावें मांग आज कल।
गृहस्थी देखने लगे सिनेमे सांग आज कल।
इसीलिये मुँह पिचके सूखी टांग आज कल।
बत्ती बिन तेल सूखी जलाई गई।।३।।

संन्यासी ही वेद का उपदेश करते थे।
छल कपट तज कर सच्चाई पेश करते थे।
गृहस्थियों के सारे दूर क्लेश करते थे।
गृहस्थियों से कार्य तीन विशेष करते थे।
बने साधुओं के ही हजारों पंथ आज कल।
सत्यासत्य गए भूल पंथ में संत आज कल।
सुरा सुन्दरी सेवन करे महन्त आज कल।
वर्ण आश्रमों का किया है अन्त आज कल।
भीष्म चक्कर पे दुनिया चढ़ाई गई।।४।।

धन कमावें और लुटावें जुल्म ढाने के लिये।
दोष देते हैं मगर जालिम जमाने के लिये।।टेक।।

किसको कहता है जमाना आप अनर्थ ढाईए।
किसको कहता है जमाना जीवों को मरवाईए।
किसको कहता है जमाना मद्य-मांस उड़ाइए।
किसको कहता है जमाना वेश्या के घर जाइए।
लूट कर रहे रात दिन आनन्द उड़ाने के लिये।।१।।
क्या जमाने ने कहा था कर रहे जो सेठ ये।
मील मजदूरों का निशदिन कर रहे आखेट ये।
खून मजदूरों का पीकर जो फुला रहे पेट ये।
क्या बुरी तरह श्रमिकों का करते मटिया मेट ये।
क्या बने मजदूर इनकी मार खाने के लिये।।२।।
गर्म कैसा रातदिन ये लूट का बाजार है।
ब्लैक रिश्वत और बाजारी चोर की भरमार है।
क्या किसी की शर्म उसको जो शर्मायेदार है।
कोठी बंगले कार जिस पै उसकी ही सरकार है।
कार जा रही है कलेक्टर को बुलाने के लिये।।३।।
पूंजीपति के बाग बंगले और ऊंची कोठियाँ।
देवी जी के सूटसैण्डिल और दो-दो चोटियाँ।
खाने को हैं चाय अंडे, मांस की हैं बोटियाँ।।
झोंपड़ी मजदूर की है प्याज और दो रोटियाँ।
दूध घी मिलता नहीं पीने पिलाने के लिये।।४।।
पेटू को देखो उधर वो ज्यादा खाके मर गया।
और उधर मजदूर भूका तड़फड़ाके मर गया।
डाकुओं के हाथ पेटू धन लुटाके मर गया।।
मजदूर कपड़े के बिना सर्दी में आके मर गया।
कफन तक मिलता नहीं शव को छुपाने के लिये।।५।।
होश में आ बेकसों का पी रहा क्या रक्त है।
दिल तेरा पाषाण से भी हो गया क्या सख्त है।
शेखी सब झड़ जायेगी वो आने वाला वक्त है।
पलट जायेगा ये तख्ता देखना एक लख्त है।
भीष्म आयेंगे कहाँ तुमको बचाने के लिये।।६।।

स्वामी भीष्म भजनावली

स्वामी भीष्म जी महाराज के चुने हुए भजनों का संग्रह
मूल्य ७० रुपये केवल
प्रकाशक और प्राप्तिस्थान
शिवकुमार आर्य (पौत्र)
भीष्म भवन घरौंडा, जिला करनाल

स्वतंत्रता सेनानी स्वामी भीष्म जी की स्मृति में यज्ञ का आयोजन

घरौण्डा, गत आठ जनवरी को अमर क्रांतिकारी, आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी, महान् स्वतंत्रता सेनानी स्वामी भीष्म जी पुण्यस्मृति में श्री विश्वकर्मा मन्दिर घरौण्डा में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में श्री ज्ञानचन्द शास्त्री पलवल, पं० रतिराम जी फरीदाबाद, स्वामी रुद्रवेश जी, बलवानसिंह सोलंकी दिल्ली, ब्रह्मर्षि विश्वकर्मा जनचेतना मंच हरियाणा के अध्यक्ष एवं सर्वब्राह्मण एकता मंच हरियाणा के उपाध्यक्ष पं० रविदत्त शास्त्री जींद, मामचन्द जी आर्य, सहारनपुर, राजेश आर्य घरौण्डा, श्री रमेश धीमान आदि सैंकड़ों लोगों ने स्वामी भीष्म जी की देश के प्रति की गई सेवाओं को याद किया। यज्ञ के आयोजक श्री शिवकुमार आर्य ने बताया कि ३१ मार्च २०१३ को स्वामी भीष्म जी का १५३ वां जयन्ती समारोह घरौण्डा में धूमधाम से मनाने का निश्चय किया है। स्वामी भीष्म जी की रचनाओं के प्रकाशन पर भी विचार किया गया। इण्टरनैट पर swamibhishamji.org. के नाम से वेबसाईट का निर्माण किया गया है जिस पर स्वामी भीष्मजी महाराज का साहित्य एवं फोटो आदि उपलब्ध हैं।

यज्ञ में उपस्थित सभी बंधुओं ने स्वामीजी के आदर्शों पर चलने का संकल्प किया तथा उनके सुविचारों के प्रचार प्रसार का बीड़ा उठाया। ऋषि लंगर के साथ सभा सम्पन्न हुई। –शिवकुमार आर्य (०९७२९०७२६९६)

आर्यसमाज अंधेरी (प०) मुंबई का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज में चतुर्वेद शतक २१ कुण्डीय महायज्ञ २० से २३ दिसम्बर २०१२ तक आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्त्व में सम्पन्न हुआ। आर्ष गुरुकुल चोटीपुरा की कन्याओं ने वेदपाठ किया। आचार्य जी ने समाज और परिवार के संदर्भ में यज्ञ के महत्त्व और सार्थकता पर प्रकाश डाला। मधुर गायक पं० कंचनकुमार जी के भजनों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। २३ दिसम्बर को पूर्णाहुति के पश्चात् मुंबई की समस्त आर्यसमाजों की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी का ८७ वां बलिदान दिवस मनाया गया। आर्यसमाज के प्रधान हरीश आर्य ने सभी श्रोताओं और वक्ताओं का आभार व्यक्त किया। मंत्री श्रीमती उर्मिल बहल ने योग्यतापूर्वक कार्यक्रम का संचालन किया। (हरीश आर्य प्रधान)

वीतराग महात्मा प्रभुआश्रित साधनास्थली

आर्य नगर रोहतक–१२४००१ फोन : २५३२१४

सामवेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

शुक्रवार २२ फरवरी से रविवार २४ फरवरी २०१३ तक

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य सत्यव्रत जी

भजन : महात्मा ओम् मुनि जी

प्रवचन : सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ० सुरेन्द्र कुमार, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

वेदपाठ : आर्ष गुरुकुल एटा

समय : २२ फरवरी सायं ३ से ६ बजे; २३ फरवरी प्रातः ६ से ९ बजे, सायं ३ से ६ बजे; २४ फरवरी प्रातः ६ से १० बजे तक पूर्णाहुति, ऋषिलंगर।

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का वार्षिक उत्सव ९–१० मार्च को

इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन भी होगा। उत्सव पर अनेक संन्यासी, विद्वान् भजनोपदेशाक पधारेंगे। ९ मार्च को दोपहर बाद रोमांचक व्यायाम प्रदर्शन होंगे। सभी गुरुकुल प्रेमी और यज्ञ प्रेमी सज्जनों से निवेदन है अधिकाधिक संख्या में पधारकर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

–**आचार्य विजयपाल,** महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर

शांतिधर्मी परिसर में

पूर्णिमा महोत्सव

२५ फरवरी, २०१३ सोमवार, सायं ३ बजे से

आप सादर आमंत्रित हैं।

निकट शिव धर्मशाला, नरवाना मार्ग, जींद

हमारे कुछ प्रमुख प्रकाशन

१– वीर बालकों की कहानियाँ (सत्यसुधा शास्त्री) सच्ची ऐतिहासिक कहानियाँ ३०/–

२– स्वाभिमान का प्रतीक मेवाड़ (राजेशार्य आट्टा) प्रथम संस्करण १५/–

३– स्वाभिमान का प्रतीक मेवाड़ (राजेशार्य आट्टा) द्वितीय संस्करण २५/

४– योग परिचय १५/–

(लेखक हरिवंश वानप्रस्थी) योग के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी देने वाला अमूल्य ग्रंथ)

५– हिन्दू इतिहास वीरों की दास्तान (लेखक राजेशार्य एम०ए०) द्वितीय संस्करण ७०/–

डा० सुरेन्द्र कुमार शर्मा अज्ञात द्वारा लिखित हिन्दू इतिहास हारों की दास्तान की प्रामाणिक समीक्षा

प्राप्ति स्थान

शांतिधर्मी कार्यालय

७५६/३ आदर्श नगर सुभाष चौक जींद–१२६१०२

भिवानी में हमारे अधिकृत प्रतिनिधि

हर प्रकार का वैदिक साहित्य व अन्य धार्मिक साहित्य प्राप्त करने के लिए पधारिए

दीप प्रकाशन

(वैदिक साहित्य के प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता)

कृष्णा कालोनी, माल गोदाम रोड़ गली में, भिवानी-१२७०२१ (हरियाणा)

नोट :

शांतिधर्मी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित साहित्य के लिए व शांतिधर्मी की वार्षिक, आजीवन सदस्यता के लिए भी संपर्क कर सकते हैं।

मोबाईल-६४१६१ ६४३७१

दिन में मिलने का स्थान-

आर्य समाज घंटाघर, भिवानी

MAHARSHI DAYANAND EDUCATION INSTITUTE

An Autonomous Institute Under the Control & Management of G.R.E.S.W. Society (Regd.) Bohal

202, OLD HOUSING BOARD, BHIWANI-127021 (HAR.)

I.T.I. की इलैक्ट्रिशियन, फीटर, वैल्डर, पलम्बर, मशीनिस्ट आदि सभी ट्रेड व अन्य डिप्लोमा कोर्स दूरवर्ती माध्यम से करने के लिए व अपने क्षेत्र में संस्थान का केन्द्र स्थापित करने के सम्पर्क करें।

संस्थान से I.T.I. कोर्स किये अनेक विद्यार्थी सरकारी/गैर सरकारी विभागों में कार्यरत हैं।

पंजीकृत कार्यालय सम्पर्क सूत्र :
09728004587, 09813804026
Website : www.grngo.org

सचिव : नरेश सिहाग, एडवोकेट
(पूर्व कानूनी सलाहकार, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड)
चैम्बर नं. 175, जिला अदालत, भिवानी–127021 (हरि.)
09255115175, 09466532152

ओ३म्

M.A. : 9992025406
P. : 9728293962

NDA No. : 236964
DL No. : 2064

अशोका मैडिकल हॉल

Pharmacist, आयुर्वेद रत्न
R.M.P.M.B.M.S.

हमारे यहाँ पर नजला, पथरी, ल्यूकोरिया, शारीरिक कमजोरी, दाद, खारीश का आयुर्वेदिक देशी जड़ी बूटियों द्वारा ईलाज किया जाता है;

विशेष : हमारे यहाँ जीवन दायिनी च्यवनप्राश मिलता है।

अशोका मैडिकल हाल नजदीक वैद्य रामचन्द्र हस्पताल, पटियाला चौक, जीन्द

ओ३म्

फोन : २५२६०६ (दु०)
९४१६५४५५३८ (मो०)

सत्यम स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो. सत्यव्रत आर्य सुपुत्र रमेश चन्द्र आर्य

नजदीक सत्यनारायण मंदिर, सुनार मार्किट,
मेन बाजार, जीन्द (हरि०)–१२६१०२

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक चन्द्रभानु आर्य द्वारा अपने स्वामित्व में, ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६ १०२ (हरि०) से २४-१-२०१३ को प्रकाशित।

विज्ञान ने भी आर्य-द्रविड़ के भेद को नकारा

फेसबुक की दुनिया से--

प्रस्तुति-डॉ॰ विवेक आर्य, शिशु-रोग विशेषज्ञ, drvivekarya@yahoo.com

सदियों से भारतीय इतिहास पर छायी आर्य आक्रमण सम्बन्धी झूठ की चादर को विज्ञान की खोज ने एक झटके में ही तार-तार कर दिया है। विज्ञान की आंखों ने जो देखा है उसके अनुसार तो सच यह है कि आर्य आक्रमण नाम की चीज न तो भारतीय इतिहास के किसी कालखण्ड में घटित हुई और न ही आर्य तथा द्रविड़ नामक दो पृथक् मानव नस्लों का अस्तित्व ही कभी धरती पर रहा है।

इतिहास और विज्ञान के मेल के आधार पर यह क्रांतिकारी जैव-रासायनिक डीएनए गुणसूत्र आधारित अनुसंधान फिनलैण्ड के तारतू विश्वविद्यालय एस्टोनिया में हाल ही में सम्पन्न हुआ है।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ0 कीवीसील्ड के निर्देशन में एस्टोनिया स्थित एस्टोनियन बायोसेंटर, तारतू विश्वविद्यालय के शोध छात्र ज्ञानेश्वर चौबे ने अपने अनुसंधान में यह सिद्ध किया है कि सारे भारतवासी जीन अर्थात् गुणसूत्रों के आधार पर एक ही पूर्वजों की संतानें हैं, आर्य और द्रविड़ का कोई भेद गुणसूत्रों के आधार पर नहीं मिलता है, और तो और जो अनुवांशिक गुणसूत्र भारतवासियों में पाए जाते हैं वे डीएनए गुणसूत्र दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं पाए गए।

शोधकार्य में अखण्ड भारत अर्थात वर्तमान भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका और नेपाल की जनसंख्या में विद्यमान लगभग सभी जातियों, उपजातियों, जनजातियों के लगभग 13000 नमूनों के परीक्षण-परिणामों का इस्तेमाल किया गया। इनके नमूनों के परीक्षण से प्राप्त परिणामों की तुलना मध्य एशिया, यूरोप और चीन-जापान आदि देशों में रहने वाली मानव नस्लों के गुणसूत्रों से की गई। इस तुलना में पाया गया कि सभी भारतीय चाहे वे किसी भी धर्म को मानने वाले हैं, 99 प्रतिशत समान पूर्वजों की संतानें हैं।

जेनेटिक हिस्ट्री ऑफ साउथ एशिया

ज्ञानेश्वर चौबे को जिस बिन्दु पर शोध के लिए पीएच.डी. उपाधि स्वीकृत की गई है उसका शीर्षक है- 'डेमॉग्राफिक हिस्ट्री ऑफ साउथ एशिया : द प्रिवेलिंग जेनेटिक कॉंटिनिटी फ्रॉम प्रीहिस्टोरिक टाइम्स' अर्थात् दक्षिण एशिया का जनसांख्यिक इतिहास : पूर्व ऐतिहासिक काल से लेकर अब तक की अनुवांशिकी निरंतरता।' संपूर्ण शोध की उपकल्पना ज्ञानेश्वर के मन में उस समय जागी जब वह हैदराबाद स्थित सेन्टर फार सेल्यूलर एंड मोलेक्यूलर बायोलॉजी अर्थात् सीसीएमबी में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध भारतीय जैव वैज्ञानिक डॉ0 लालजी सिंह और डॉ0 के0 थंगराज के अन्तर्गत परास्नातक बाद की एक शोधपरियोजना में जुटे थे।

ज्ञानेश्वर के मन में विचार आया कि जब डीएनए जांच के द्वारा किसी बच्चे के माता-पिता के बारे में सच्चाई का पता लगाया जा सकता है तो फिर भारतीय सभ्यता के पूर्वज कौन थे, इसका भी ठीक-ठीक पता लगाया जा सकता है। बस फिर क्या था, उनके मन में इस शोधकार्य को कर डालने की जिद पैदा हो गई। ज्ञानेश्वर बताते हैं-बचपन से मेरे मन में यह सवाल उठता रहा है कि हमारे पूर्वज कौन थे? बचपन में जो पाठ पढ़े, उनसे तो भ्रम की स्थिति पैदा हो गई थी कि क्या हम आक्रमणकारियों की संतान हैं? दूसरे एक मानवोचित उत्सुकता भी रही। आखिर प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कभी न कभी तो यह जानने की उत्सुकता पैदा होती ही है कि उसके परदादा-परदादी कौन थे, कहां से आए थे, उनका मूलस्थान कहां है और इतिहास के बीते हजारों वर्षों में उनके पुरखों ने प्रकृति की मार कैसे सही, कैसे उनका अस्तित्व अब तक बना रहा है? ज्ञानेश्वर के अनुसार, पिछले एक दशक में मानव जेनेटिक्स और जीनोमिक्स के अध्ययन में जो प्रगति हुई है उससे यह संभव हो गया है कि हम इस बात का पता लगा लें कि मानव जाति में किसी विशेष नस्ल का उद्भव कहां हुआ, वह उद्विकास प्रक्रिया में दुनिया के किन-किन स्थानों से गुजरी, कहाँ-कहाँ रही और उनके मूल पुरखे कौन रहे हैं?

उनके अनुसार- माता और पिता दोनों के डीएनए में ही उनके पुरखों का इतिहास भी समाया हुआ रहता है। हम जितनी गहराई से उनकी डीएनए संरचना का अध्ययन करेंगे, हम यह पता कर लेंगे कि उनके मूल जनक कौन थे? और

तो और इसके द्वारा पचासों हजार साल पुराना अपने पुरखों का इतिहास भी खोजा जा सकता है?

कैंब्रिज के डॉ0 कीवीसील्ड ने किया शोध निर्देशन

हैदराबाद की प्रयोगशाला में शोध करते समय उनका संपर्क दुनिया के महान जैव वैज्ञानिक प्रोफेसर कीवीसील्ड के साथ हुआ। प्रो0 कीवीसील्ड संसार में मानव नस्लों की वैज्ञानिक ऐतिहासिकता और उनकी बसावट पर कार्य करने वाले उच्चकोटि के वैज्ञानिक माने जाते हैं। इस नई सदी के प्रारंभ में ही प्रोफेसर कीवीसील्ड ने अपने अध्ययन में पाया था कि दक्षिण एशिया की जनसांख्यिक संरचना अपने जातीय एवं जनजातीय स्वरूप में न केवल विशिष्ट है वरन् वह शेष दुनिया से स्पष्टत: भिन्न है। संप्रति प्रोफेसर डॉ0 कीवीसील्ड कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के बायोसेंटर का निर्देशन कर रहे हैं।

प्रोफेसर डॉ0 कीवीसील्ड की प्रेरणा से ज्ञानेश्वर चौबे ने एस्टोनियन बायोसेंटर में सन् 2005 में अपना शोधकार्य प्रारंभ किया और देखते ही देखते जीवविज्ञान सम्बंधी अंतरराष्ट्रीय स्तर के शोध जर्नल्स में उनके दर्जनों शोध पत्र प्रकाशित हो गए।

अपने अनुसंधान के द्वारा ज्ञानेश्वर ने इसके पूर्व हुए उन शोधकार्यों को भी गलत सिद्ध किया है जिनमें यह कहा गया है कि आर्य और द्रविड़ दो भिन्न मानव नस्लें हैं और आर्य दक्षिण एशिया अर्थात् भारत में कहीं बाहर से आए। उनके अनुसार- 'पूर्व के शोधकार्यों में एक तो बहुत ही सीमित मात्रा में नमूने लिए गए थे, दूसरे उन नमूनों की कोशिकीय संरचना और जीनोम इतिहास का अध्ययन श्लो-रीजोलूशन अर्थात् न्यून-आवर्धन पर किया गया। इसके विपरीत हमने अपने अध्ययन में व्यापक मात्रा में नमूनों का प्रयोग किया और 'हाई-रीजोलूशन' अर्थात् उच्च आवर्धन पर उन नमूनों पर प्रयोगशाला में परीक्षण किया तो हमें भिन्न परिणाम प्राप्त हुए।'

माइटोकांड्रियल डीएनए में छुपा है पुरखों का इतिहास

ज्ञानेश्वर द्वारा किए गए शोध में माइटोकांड्रियल डीएनए और वाई क्रोमासोम्स और उनसे जुड़े हेप्लोग्रुप के गहन अध्ययन द्वारा सारे निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं। उल्लेखनीय है कि माइटोकांड्रिया मानव की प्रत्येक कोशिका में पाया जाता है। जीन अर्थात् मानव गुणसूत्र के निर्माण में भी इसकी प्रमुख भूमिका रहती है। प्रत्येक मानव जीन अर्थात गुणसूत्र के दो हिस्से रहते हैं। पहला न्यूक्लियर जीनोम और दूसरा माइटोकांड्रियल जीनोम। माइटोकांड्रियल जीनोम गुणसूत्र का वह तत्व है जो किसी कालखण्ड में किसी मानव नस्ल में होने वाले उत्परिवर्तन को अगली पीढ़ी तक पहुंचाता है और वह इस उत्परिर्तन को आने वाली पीढ़ियों में सुरक्षित भी रखता है।

इसे इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि माइटो-कांड्रियल डीएनए वह तत्व है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक माता के पक्ष की सूचनाएं अपने साथ हूबहू स्थानांतरित करता है। यहाँ यह समझना जरूरी है कि किसी भी व्यक्ति की प्रत्येक कोशिका में उसकी माता और उनसे जुड़ी पूर्व की हजारों पीढ़ियों के माइटोकांड्रियल डीएनए सुरक्षित रहते हैं।

इसी प्रकार वाई क्रोमोसोम्स पिता से जुड़ी सूचना को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानांतरित करते हैं। वाई क्रोमोसोम्स प्रत्येक कोशिका के केंद्र में रहता है और किसी भी व्यक्ति में उसके पूर्व के सभी पुरुष पूर्वजों के वाई क्रोमोसोम्स सुरक्षित रहते हैं। इतिहास के किसी मोड़ पर किसी व्यक्ति की नस्ल में कब और किस पीढ़ी में उत्परिवर्तन हुआ, इस बात का पता प्रत्येक व्यक्ति की कोशिका में स्थित वाई क्रोमोसोम्स और माइटोकांड्रियल डीएनए के अध्ययन से आसानी से लगाया जा सकता है। यह बात किसी समूह और समुदाय के संदर्भ में भी लागू होती है।

एक वंशवृक्ष से जुड़े हैं सभी भारतीय:-

ज्ञानेश्वर ने अपने अनुसंधान को दक्षिण एशिया में रहने वाले विभिन्न धर्मों-जातियों की जनसांख्यिकी संरचना पर केंद्रित किया। शोध में पाया गया है कि तमिलनाडु की सभी जातियों-जनजातियों, केरल, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश जिन्हें पूर्व में कथित द्रविड़ नस्ल से प्रभावित माना गया है, की समस्त जातियों के डीनएन गुणसूत्र तथा उत्तर भारतीय जातियों-जनजातियों के डीएनए का उत्पत्ति-आधार गुणसूत्र एक समान है।

उत्तर भारत में पाये जाने वाले कोल, कंजर, दुसाध, धरकार, चमार, थारू, क्षत्रिय और ब्राह्मणों के डीएनए का मूल स्रोत दक्षिण भारत में पाई जाने वाली जातियों के मूल स्रोत से कहीं से भी अलग नहीं हैं। इसी के साथ जो गुणसूत्र उक्त जातियों में पाए गए हैं वहीं गुणसूत्र मकरानी, सिंधी, बलोच, पठान, ब्राहुई, बुरूषो और हजारा आदि पाकिस्तान में पाये जाने वाले समूहों के साथ पूरी तरह से मेल खाते हैं।

राजकीय उच्च विद्यालय ग्राम नाड़ा जिला हिसार की सभी १६५ कन्याओं को समाज सेवी दानवीर श्री वेदप्रकाश बेनीवाल ने शाल भेंट की। इस अवसर पर लिए गए चित्रों में श्री वेद प्रकाश बेनीवाल छात्राओं को शाल भेंट करते हुए। साथ में विद्यालय के अध्यापकगण व गांव के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

ओ३म्

शांतिधर्मी एक अद्वितीय पत्रिका है

इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये स्वस्थ और सुरुचिपूर्ण सामग्री होती है।

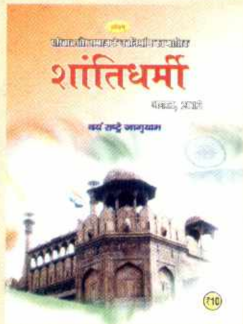

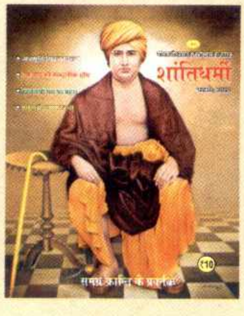

- **शांतिधर्मी** में धर्म-दर्शन के रहस्य, राष्ट्र व समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अधिकारी विद्वानों के श्रेष्ठ विचार होते हैं।
- **शांतिधर्मी** भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक दिखाता है।
- **शांतिधर्मी** वह मार्ग दिखाता है, जिसे पाने के लिये लोग भटक रहे हैं। परिवार में समाज में सह-अस्तित्व व अन्तरात्मा में सुख शांति का संदेशवाहक है।
- **शांतिधर्मी** उस अध्यात्म का प्रचार करता है-जिसे अपनाने में देश-काल, जाति, मजहब, सम्प्रदाय की सीमाएँ आड़े नहीं आतीं। यह सच्चे ईश्वरीय ज्ञान का प्रचारक है।
- **शांतिधर्मी** स्वाध्याय भी है और स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी।
- **शांतिधर्मी** प्रत्येक श्रेष्ठ-धार्मिक-राष्ट्रप्रेमी-मानवतावादी-व्यक्ति के लिये एक विचार-सूत्र है। प्रत्येक श्रेष्ठ परिवार का आभूषण है।

शांतिधर्मी पढ़िये-

अपने प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, ईश्वर के प्रति सर्वांगीण दायित्वों को जानिये।

जीवन के जटिल व गूढ़ रहस्यों को सहज ही सुलझाईये।

शान्तिधर्मी कार्यालय

756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक)
जीन्द-126102 (हरियाणा)
मो. 09416253826 E-mail : shantidharmijind@gmail.com